मार्च 2025

दादावाणी

Retail Price ₹ 20

फिर से शादी न करनी हो तो डिवोर्स लेना। फिर दूसरा पति या पत्नी ठीक मिलेंगे या नहीं उसका क्या भरोसा?
तलाक से तो बच्चों के मानस पर गहरा असर होता है, उनकी हाय लगती हैं! ये तो बेभानपने में डिवोर्स लेते हैं!

पुणे : त्रिमंदिर प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव : ता. 12 से 16 फरवरी 2025

स्वागत

सांस्कृतिक कार्यक्रम

श्री शिव भगवान की प्रतिष्ठा

श्री कृष्ण भगवान की प्रतिष्ठा

वर्ष : 20 अंक : 5
अखंड क्रमांक : 233
मार्च 2025
पृष्ठ - 32

Editor : Dimple Mehta
© 2025
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Multiprint
Opp. H B Kapadiya New High School, At-Chhatral, Tal: Kalol, Dist. Gandhinagar - 382729

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
5 साल
भारत : 1000 रुपये
वार्षिक
भारत : 200 रुपये
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

'नो डिवोर्स' अपनी वन फैमिली

संपादकीय

इस दुनिया की सामाजिक रचना में कालचक्र के आधार पर हर एक आरे में स्त्री-पुरुष के, पति-पत्नी के संबंधों में प्राकृतिक भिन्नता देखने मिलती हैं। सतयुग में प्राकृतिक सरलता के कारण पति-पत्नी में प्रोब्लेम्स जीवन में कभी-कभी ही होते थे! आजकल कलियुग में घर-घर में, पति-पत्नी के बीच हर रोज़ क्लेश-मतभेद बहुत देखने को मिलते हैं। विचारभेद में से शुरू होते मतभेद, मतभेद में से मनभेद और मनभेद में से आगे जाकर डिवोर्स सामान्य तौर पर देखने मिलते हैं।

प्रस्तुत अंक में, डिवोर्स होने के कारण, परिणाम और उनके हल के लिए सही समझ परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) उद्बोधित सत्संगों में से हमें संकलित होकर प्राप्त होते हैं।

विवाहित जीवन में पति-पत्नी का एडजस्टमेन्ट होता ही न हो, तो क्या करना चाहिए? क्या डिवोर्स लेना चाहिए? उसके जवाब में दादाश्री बताते हैं कि यदि फिर से शादी न करनी हो तो डिवोर्स लेना। फिर दूसरा पति या पत्नी ठीक मिलेंगे या नहीं उसका क्या भरोसा? तलाक से तो बच्चों के मानस पर गहरा असर होता है, उनकी हाय लगती हैं! ये तो बेभानपने में डिवोर्स लेते हैं!

हम तो आर्यप्रजा हैं, क्या ऐसा हमें शोभा देगा? हिन्दुस्तान के लोग कैसे भी मतभेदों को चला लेते हैं, जबकि फॉरेनर्स एक मतभेद में अलग हो जाते हैं, इसका क्या रहस्य है? हम पूर्व से प्रतिक्रमण करते-करते डेवलप होकर आए हैं, इसलिए निभा सकते हैं, जिनके प्रतिक्रमण नहीं हुए, वे नहीं निभा सकते। प्रतिक्रमण से निकाल कर सकें, वैसा है।

दादाश्री कहते हैं कि माय फैमिली (मेरा परिवार) में एक तोड़े तो दूसरे को जोड़ते रहना है। फिर भी मेल न बैठे तो अलग हो जाते हैं लोग। परंतु हम तो एक ही शब्द देते हैं, एडजस्ट एवरीव्हेर। शादी की अर्थात् प्रॉमिस टू पे किया (वचन दिया)। माय फैमिली का अर्थ क्या होता है? वहाँ विचारभेद हो सकते हैं, परंतु क्लेश तो होते ही नहीं, दखल नहीं होता।

माय फैमिली में आपने जीना नहीं सीखा, यों सबकुछ पढ़ा-लिखा लेकिन पहले यह शिक्षा नहीं लेनी चाहिए कि पत्नी, पति, बच्चों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए? व्यावहारिक जीवन में पंचर को जोड़ना तो उसके एक्सपर्ट अनुभवी ही सिखा सकते हैं! कितनी ही फैमिली में (लोग) नासमझी से अपना पकड़ा हुआ छोड़ते ही नहीं, तलाक लेने की तैयारियाँ चल रही होती हैं, ऐसे लोगों को दादाश्री ने ऐसे व्यवहार ज्ञान की भेंट दी, मतभेद-मनभेद का भूत निकालकर ठीक कर दिया। ऐसे हर एक पति-पत्नी को वन फैमिली में लेट गो करके, प्रेम से निभाकर, फाइलों का समभाव से *निकाल* करके मोक्षमार्ग में प्रगति करें, यही हृदयपूर्वक अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

'नो डिवोर्स' अपनी वन फैमिली

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

बेमेल जोड़े में बिगड़े तो एक शांत रहे

शादी का परिणाम दो रूप में आता है: कभी आबादी में जाता है, तो कभी बरबादी में जाता है। शादी की, शादी के फल चख लिए, अब 'वीतराग' रहना है। यह संसार, वह खारा ही है, लेकिन मोह की वजह से भूल जाते हैं। मार खाने के बाद वापस मोह चढ़ जाता है, वही भूलभुलैया है। यदि स्वरूप का अज्ञान चला जाए और 'स्वरूप ज्ञान' मिल जाए तो वह भूलभुलैया परेशान नहीं करेगी। 'ज्ञानी पुरुष' आत्मज्ञान दे देते हैं, इसलिए भूलभुलैया में से छूटते हैं और मोक्ष की मुहर लग जाती है!

प्रश्नकर्ता : (कलियुग में अधिकतर) अपने विवाहित जीवन में निन्यानवे प्रतिशत बेमेल जोड़े हैं।

दादाश्री : हमेशा जिसे बेमेल जोड़ा कहा जाता है न, कलियुग में यदि बेमेल जोड़ा हुआ हो तो वह बेमेल जोड़ा या तो ऊपर ले जाता है या तो बिलकुल अधोगति में ले जाता है। दोनों में से एक कार्यकारी होता है और सुमेल जोड़ा कार्यकारी नहीं होता। बेमेल जोड़ा हुआ तो वह उच्च गति में ले जाता है और सुमेल जोड़ा यों भटकाता रहता है, साथ-साथ।

प्रश्नकर्ता : इस दुषमकाल में, इसका प्रभाव ही ऐसा है कि बेमेल जोड़ा हो तो उसके ऊपर जाने की संभावनाएँ कितनी हैं?

दादाश्री : कम। इस काल में नीचे ज़्यादा जाएँगे। यानी यह तो सब ऐसा ही है, यह काल ही ऐसा है। हम किस तरह जीत गए हैं, वह हम ही जानते हैं।

प्रश्नकर्ता : वही सभी को बताइए न, वही सभी को जानना है।

दादाश्री : अभी हीरा बा यहाँ पर नमस्कार करके, दर्शन करती हैं न रोज़ सुबह के समय, रोज़ रात को दर्शन करके, माथे पर पैर रखवाकर और फिर वे विधि करती हैं। अभी भी हमारा व्यवहार ऐसा है। हमने व्यवहार बिगड़ा नहीं था न!

बेमेल जोड़े में क्या होना चाहिए, कि वह बिगड़े तो आपको शांत रहना चाहिए, यदि आप समझदार हैं तो। लेकिन वह बिगड़े और आप भी बिगड़ जाओ उसमें रहा क्या?

प्रश्नकर्ता : परंतु दादा, उस प्रकार की स्थिरता कहाँ से लाएँ? ऐसी समझ कब आएगी?

दादाश्री : हाँ, सही है, वह स्थिरता तो नहीं आती। समझ में नहीं आता, इसलिए तो यह सब अधोगति में जाने वाला माल है न!

जीना नहीं आता, तब डिवोर्स

प्रश्नकर्ता : मान लो कि, हज़बेन्ड-वाइफ एक-दूसरे से एडजस्ट नहीं हो पाते, तो क्या करना चाहिए, अलग हो जाना चाहिए?

दादाश्री : एडजस्टमेन्ट न होता हो और करने का प्रयत्न करने के बावजूद भी वैसा न हो

पाए, तो दोनों का बिगड़ेगा। उसके बजाय दोनों को अलग कर देना चाहिए। तुम्हारे किसी मित्र का ऐसा है क्या?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : यह कलियुग यानी डिवोर्स लेना पड़ता है क्योंकि उसे जीना ही नहीं आता है, मनुष्य की तरह।

प्रश्नकर्ता : परंतु रोज़ मनदु:ख हो, झगड़ें, उसके बजाय डिवोर्स ले लें तो?

दादाश्री : डिवोर्स लें, परंतु फिर से शादी नहीं करने वाले हैं तो। शादी आपके अनुकूल हुई हो, लेकिन फिर मतभेद हो, तब भीतर क्या होता है फिर? उस समय सुख बरतता है बहुत? मतभेद हो, तब पत्नी को क्या होता है? दोनों का मतभेद होता है तब? क्यों जवाब नहीं देती बहन? बोलो न, तुम बोलो न, तुम पढ़ी-लिखी हो। तुम्हें समझ में आता है न?

प्रश्नकर्ता : आजकल के मतभेद अर्थात् डिवोर्स ।

दादाश्री : डिवोर्स भी ले लेते हैं न? हाँ, मतभेद तो रहेंगे ही। मतभेद तो हुए बिना रहते ही नहीं न! आपके घर में मतभेद नहीं देखे आपने?

प्रश्नकर्ता : आमने-सामने निपटारा भी होता रहता है न?

दादाश्री : हाँ, निपटारा भी होता रहता है, परंतु मतभेद तो होता है न?

प्रश्नकर्ता : होता ही है।

दादाश्री : निपटारा करना पड़ता है। गाड़ी में भी साथ बैठे हों और विचित्र स्वभाव वाला हो तो उतरने तक निभाना पड़ता है, वैसे पत्नी ज़रा विचित्र स्वभाव वाली हो तो निभाना पड़ता है। निपटारा नहीं करोगे तो टूट जाएगा, अलग होना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : अभी तो आखिर में मतभेद तक पहुँच गया है।

दादाश्री : वही कह रहा हूँ न! वह सब अच्छा नहीं है, बाहर शोभा नहीं देता। इसका कोई अर्थ नहीं। लेकिन अभी भी सुधारा जा सकता है। आप मनुष्य में हैं न, इसलिए सुधार सकते हैं। यह किसलिए ऐसा होना चाहिए? भाई, फज़ीहत करता रहता है तो! थोड़ा समझना तो पड़ेगा न? आप समझ गए न? इन सब में सुपरफ्लुअस (नाटकीय) रहना है, लेकिन ये तो पत्नी के पति हो बैठे, कुछ लोग तो। अरे भाई, पतिपना क्यों दिखा रहे हो? यह तो यहाँ जीवित है तब तक पति और कल वह डिवोर्स न ले, तब तक पति। कल डिवोर्स ले तो तू किसका पति?

मनुष्य के अलावा अन्य कोई पतिपना नहीं दिखाते। अरे, आजकल तो 'डिवोर्स' लेते हैं न? वकील से कहेंगे कि, ''तुम्हें हज़ार-दो हज़ार रुपये देंगे, मुझे 'डिवोर्स' दिलवा दो।'' वह वकील भी कहेगा कि 'हाँ, दिलवा देंगे।' अरे, तुम ले लो न 'डिवोर्स' दूसरों को क्यों दिलवाने निकले हो? इसलिए हम ज्ञान दे देते हैं न झटपट। हमें तो मूल में क्रोध-मान-माया-लोभ चले जाएँ, मतभेद कम हो जाएँ, ऐसा चाहिए।

मनभेद हो वहाँ 'डिवोर्स'

प्रश्नकर्ता : व्यवहारिक बाबत में मतभेद हो, वह विचारभेद कहलाता है या मतभेद कहलाता है?

दादाश्री : वह मतभेद कहलाता है। यह ज्ञान लिया हो उसके लिए विचारभेद कहा जाएगा,

वर्ना मतभेद कहलाता है। मतभेद से तो झटका लगता है!

प्रश्नकर्ता : मतभेद कम रहे तो वह अच्छा है न?

दादाश्री : मनुष्य में मतभेद तो होना ही नहीं चाहिए। यदि मतभेद है तो वह मानवता ही नहीं कही जाएगी क्योंकि मतभेद से तो कभी कभी मनभेद हो जाता है। मतभेद से मनभेद हो जाए तो 'तू ऐसी है और तू तेरे घर चली जा', ऐसा चलेगा। उसमें फिर मज़ा नहीं आएगा। इसलिए जैसे-तैसे निभा लेना है।

मतभेद यानी अहंकार की उपस्थिति। मतभेद अच्छा लगता है? मतभेद होता है, तब झगड़े होते हैं, चिंता होती है। एक-दूसरे की अक्ल ढूँढने जाते हैं, वहाँ बुनियादी मतभेद होता है। वहाँ सावधानी रखनी पड़ती है। मनभेद में क्या होता है? मनभेद हो जाए तो, 'डिवोर्स' लेते हैं और तनभेद हो जाए तब अर्थी निकलती है!

दरार डालने वाले को लगता है दोष

प्रश्नकर्ता : दादा, एक हज़बेन्ड और वाइफ, दोनों में तकरार हो जाती है और उसमें अलग हो जाते हैं (डिवोर्स) तो दोष किसे लगता है? उसे कर्म का उदय माना जाएगा, क्या माना जाएगा? वास्तव में किसका दोष कहलाएगा?

दादाश्री : वे सब कर्म के उदय हैं। कुछ भी हकीकत, वास्तविकता हो, वह कर्म का उदय है! फिर उदय कैसा भी हो, गलत उदय या खराब उदय, परंतु कर्म का उदय ही करवाता है इसलिए उसमें अन्य किसी की नहीं चलती। शायद दूसरा निमित्त हो जाए कि इसने दरार डाली लेकिन आखिर में वह कर्म का उदय है। दरार डालने वाला निमित्त ऐसा मिल जाता है कि इनमें दरार डाली इसलिए ये दोनों अलग हो गए।

प्रश्नकर्ता : दादा, दोष किसे लगता है? वे अलग हो जाते हैं, उसमें दोष किसे लगता है?

दादाश्री : जिसने दरार डाली हो उसे।

कलुषित घर, तो हो जा झगड़ाप्रूफ

प्रश्नकर्ता : हमें झगड़ा नहीं करना हो, हम कभी झगड़ा ही नहीं करते हों, फिर भी घर में सभी रोज़ सामने से झगड़ा करें, तो वहाँ क्या करना चाहिए?

दादाश्री : आपको 'झगड़ाप्रूफ' हो जाना चाहिए। 'झगड़ाप्रूफ' हो जाओ तभी इस संसार में रह पाओगे। हम आपको 'झगड़ाप्रूफ' कर देंगे। झगड़ा करने वाला भी ऊब जाए, ऐसा अपना स्वरूप होना चाहिए। 'वर्ल्ड' में भी कोई आपको 'डिप्रेस' न कर सके, ऐसा होना चाहिए। आप 'झगड़ाप्रूफ' हो गए फिर झंझट ही नहीं रही न! लोगों को झगड़ा करना हो, गाली देनी हो, तब भी दिक्कत नहीं और उसके बावजूद बेशर्म नहीं कहे जाएँगे, बल्कि (आपकी) जागृति बहुत बढ़ेगी।

पूर्वजन्म में जो झगड़े किए उससे बैर बंध जाते हैं और वे आज झगड़े के रूप में चुकता हो रहे हैं। झगड़ा होता है उसी समय बैर का बीज डल जाता है, वह अगले जन्म में उगेगा।

प्रश्नकर्ता : तो वह बीज कैसे दूर हो सकता है?

दादाश्री : धीरे-धीरे 'समभाव से *निकाल*' करते रहो, तो दूर होगा। बहुत भारी बीज डल गया हो, तो देर लगेगी, शांति रखनी पड़ेगी। प्रतिक्रमण बहुत करने पड़ेंगे। आपका कोई कुछ नहीं लेता। दो टाइम खाना मिलता है, कपड़े मिलते हैं, फिर

क्या चाहिए? कमरे में ताला लगाकर जाए, परंतु आपको दो टाइम खाना मिलता है या नहीं मिलता, इतना ही देखना है। आपको बंद करके जाए, तब भी कुछ नहीं, आपको सो जाना है। पूर्वजन्म के बैर ऐसे बंधे हुए होते हैं कि आपको ताले में बंद करके जाएँगे! बैर और फिर नासमझी से बंधा हुआ! समझ वाला हो तो हम समझ जाते हैं कि यह समझ वाला है, तब भी हल आ जाता है। अब, नासमझी का हो वहाँ कैसे हल आएगा? इसलिए वहाँ बात को छोड़ देना। इसी जन्म में सभी बैर छूट जाएँगे, हम आपको रास्ता दिखाएँगे।

खटमल काटते हैं, वे तो बेचारे बहुत अच्छे हैं, पर ये पति, पत्नी को काटते हैं। पत्नी पति को काटती है, वह बहुत बुरा होता है। काटते हैं या नहीं काटते?

प्रश्नकर्ता : काटते हैं।

दादाश्री : तो वह काटना बंद करना है। खटमल काटते हैं, वे तो काटकर चले जाते हैं। वे बेचारे तृप्त हो जाएँ तो चले जाते हैं। परंतु पत्नी तो हमेशा काटती ही रहती है। एक व्यक्ति मुझसे कह रहा था, मेरी वाइफ मुझे नागिन की तरह काटती है! तब भाई, शादी क्यों की तूने नागिन के साथ? क्या तू नाग नहीं है, भाई? यों ही नागिन आती है क्या? नाग हो तब नागिन आती है न!

ये सभी कर्म के भोगवटे हैं। इसलिए ऐसी वाइफ, ऐसा पति मिल जाता है और आपको ही ऐसे क्यों मिले? ये तो पत्नी के साथ झगड़ा करते रहते हैं। अरे, तेरे कर्म का दोष है! लोग तो निमित्त को दोषित मानते हैं, पत्नी तो निमित्त है, निमित्त को क्यों दोषित मान रहा है? निमित्त को दोषित मानने से कभी फायदा होता है? गति बिगड़ जाती है।

प्रश्नकर्ता : इसमें किसका कर्म खराब समझें, दोनों पति-पत्नी लड़ते हों उसमें?

दादाश्री : दोनों में से जो ऊब जाए उसका।

प्रश्नकर्ता : उस लड़ाई में तो कोई ऊबता ही नहीं, वे तो लड़ते ही रहते हैं!

दादाश्री : तो दोनों का ही। यह सब तो नासमझी से होता है।

डिवोर्स के बाद लगती है बच्चों की हाय

प्रश्नकर्ता : आजकल सभी डिवोर्स लेते हैं, तलाक लेते हैं। वे छोटे-छोटे बच्चों को छोड़कर तलाक लेते हैं, तो उनकी हाय नहीं लगती?

दादाश्री : लगती है न, पर क्या कर सकते हैं? वास्तव में नहीं लेना चाहिए, वास्तव में तो निभा लेना चाहिए सब। बच्चे होने से पहले लिया होता तो हर्ज़ नहीं था, परंतु बच्चे होने के बाद लेंगे, तो बच्चों की हाय लगेगी न!

प्रश्नकर्ता : क्या ऐसा है कि, माता-पिता सुखी नहीं हैं, दु:खी हैं, तो बच्चे भी दु:खी होंगे?

दादाश्री : लेकिन अगर यह बच्चा है तो तलाक न लेना ही बेहतर है। क्योंकि बच्चे को बेचारे को तो भटकना ही है न कि पिता के पास रहना है या माता के पास रहना है?

प्रश्नकर्ता : बच्चे के पिता का ज़रा भी दिमाग न चलता हो, कोई कामकाज न करता हो, मोटल चलाना न आता हो और चार दीवारों के बीच घर में बैठा रहता हो, तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : लेकिन तुम क्या कर सकती हो? दूसरा सीधा मिलेगा या नहीं उसका क्या भरोसा?

प्रश्नकर्ता : वह तो नहीं ही है...

दादाश्री : दूसरा फिर इससे खराब, उसके

मुँह में थूके ऐसा मिल जाए तब क्या करोगी? बहुत से लोगों को ऐसा मिला है, पहले जो था वह अच्छा था। घनचक्कर फिर वहीं पड़े रहना था न! भीतर से इसे समझना पड़ेगा या नहीं समझना पड़ेगा?

प्रश्नकर्ता : दादा को सौंप दें तो फिर दूसरा सीधा मिलेगा न?

दादाश्री : अच्छा मिल जाए और तीन साल के बाद उसे अटैक आ जाए, तो क्या करोगी? इस (निरे) बिल्कुल भय वाले जगत् में किसलिए ये सब? 'जो हुआ सो करेक्ट' कहकर चला लो तो अच्छा। तीन साल बाद अटैक आए तो आपको वह पिछला था, उसकी याद आएगी। अरे, वह था उसे छोड़कर फिर इस अटैक वाले के वहाँ आ गई! अर्थात् यह सब फज़ीहत है, बहन!

यह तो, यदि आपको ऐसी झंझट हुई हो तो, मैं आपको समझा दूँगा कि इस तरह से आप चला लेना। वह तरीका बता दूँगा न, तो आपको बोझ नहीं लगेगा और उसे भी नहीं लगेगा। दोनों का ठीक कर दूँगा।

बाकी, बच्चे की तो बहुत हाय लगती है। बेचारा न तो पिता का रहा न ही माता का रहा!

अब, यदि दूसरा पति करोगी, तो इससे भी बुरा निकल जाए तो क्या कह सकते हैं? ऊपर से यों कोट-पेन्ट वाला, बहुत सुंदर दिखाई देता हो और अंदर से वह खट्टा आम निकल जाए तो क्या पता चलेगा? ऊपर से आम फर्स्ट क्लास दिखता है, पर काटने के बाद खट्टा निकल जाता है! निकलता है क्या अंदर से खट्टा?

प्रश्नकर्ता : निकलता है।

दादाश्री : ऐसा! भरोसा नहीं, नहीं? यानी उसका कोई ठिकाना नहीं। इसलिए जो चख लिया है न, वह अच्छा है, कहना। बहुत ज़्यादा आशा रखने जैसा नहीं है यह जगत्। तो बहन, मैं आपको समझा दूँगा कि आप इस तरह से चला लेना। उसके बाद बहुत आनंद आएगा। यह तो कोई ठिकाना ही नहीं है। यह तो शादी करने जैसा जगत् है ही नहीं लेकिन शादी किए बिना चले, ऐसा भी नहीं है फिर। कैसा फँसाव है! शादी करने जैसा जगत् नहीं है और शादी किए बिना चले, ऐसा नहीं है। इन परेशानियों में से रास्ता निकालना है।

प्रश्नकर्ता : क्या रास्ता निकालना चाहिए?

दादाश्री : वह तो, मुझसे निजी तौर पर उन सब रास्तों के बारे में पूछोगी न, तो मैं आपको सब बता दूँगा। हाउ टु डील वीथ हज़बेन्ड (पति के साथ कैसा वर्तन करना है), वह सब बता दूँगा। बाकी, नया करने में मज़ा नहीं है। नया करोगी और तीन साल बाद हार्ट फेल हो जाए, तब क्या करोगी? नहीं तो शराबी हो जाए, तब क्या करोगी?

प्रश्नकर्ता : इसका अर्थ यह है कि हमें अपने आप में अंदर ऐसे समझ लेना है कि इस जगत् में कोई परफेक्ट नहीं है।

दादाश्री : नहीं, वह तो मैं समझाऊँगा। आप खुद वैसा करोगी तो वह टिकेगा नहीं और मैं तो सही समझ दूँगा, टिक सकें ऐसी, हमेशा टिके ऐसी! आपकी समझ से किया हुआ आयोजन, वह तो कल सुबह फिर उड़ जाएगा। वह आयोजन नहीं चलेगा, वह तो मैं आपको सही समझ दूँगा। उसके प्लस-माइनस बता दूँगा! बच्चों के खातिर भी खुद को समझना चाहिए। एक या दो हों, परंतु वे बेचारे बेसहारा ही हो जाते हैं न! बेसहारा नहीं माने जाते?

प्रश्नकर्ता : बेसहारा ही माने जाते हैं।

दादाश्री : मम्मी कहाँ गई? पापा कहाँ गए? एक बार अपना यह एक पैर कट गया हो, तो एक जन्म निभा नहीं लेते या आत्महत्या करनी चाहिए?

प्रश्नकर्ता : निभा लेना चाहिए।

दादाश्री : आत्महत्या करनी चाहिए या उसी पैर में निभा लेना चाहिए? हं, उसी तरह यह भी कटे हुए पैर जैसा ही है। हम तो आपको समझा देते हैं, बाकी आप इसमें स्वयं उतरने जाओगी तो और ज्यादा फँस जाओगी। हम आपको कम फँसाव हो, ऐसा रास्ता बता देते हैं। क्योंकि हमें लेना-देना नहीं है और हम आपके हित में हैं कि आपको दुःख न हो, कम दुःख हो। पैर टूट जाए फिर भी आत्महत्या नहीं करूँगा, कहते हैं। यों ही जी रहा हूँ न, आराम से! तो ये सब निभाते हैं वैसा इसमें, पति में भी निभा लेना चाहिए।

रास न आए उसका करो निकाल

शादी किए बिना कोई चारा नहीं है। क्योंकि शादी बिना का जो जीवन है, उसकी इस दुनिया में खुद की वेल्यू ही नहीं रहती। लोग क्या कहते हैं कि यह चली वह! यानी लोगों (की नज़र) में भी अपना कुछ तो जीवन होना चाहिए न, नहीं होना चाहिए? शादी की तो मेरा पति, 'सबसे अच्छा-बेस्ट है', ऐसा कहना चाहिए। अर्थात् खराब, ऐसा दुनिया में कुछ होता ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : 'बेस्ट है', ऐसा कहने से तो पति सिर पर सवार हो जाएगा।

दादाश्री : नहीं, सवार नहीं होगा। वह बेचारा दिन भर बाहर काम करता रहता है, वह क्या सवार होगा? पति तो आपको जो मिलें हैं न, उन्हें ही निभा लेना है। क्या दूसरे लेने जाओगी? क्या मॉल में बिकाऊ मिलते हैं? और वह उल्टा-सीधा करो, डिवोर्स करना पड़े, वह तो बल्कि खराब दिखेगा। सामने वाला भी पूछेगा कि डिवोर्स वाली है? तब कहाँ जाओगी? उसके बजाय एक (पति) कर लिए उनका निकाल कर लेना वहाँ पर। यानी सभी जगह ऐसा होता है और आपको नापसंद हो, पर क्या करोगी? जाओगी कहाँ अब? इसलिए इसी का निकाल कर देना है। आप इन्डियन कितने पति बदलोगी? यह एक ही किया वह, जो मिला वह सही! तो इस तरह केस छोड़ देना है और पुरुषों को जैसी पत्नी मिली हो, कलह करती हो, तो भी उसके साथ निकाल कर देना अच्छा है।

कोई पूछे, 'कैसा है आपका संसार?' तब आप, 'अच्छा है कहना। ठीक भी नहीं बोलना है, बहुत अच्छा है। सभी के घर मिट्टी के चूल्हे होते हैं। फिर वहाँ पर मुँह बिगड़ जाता है। और वैसा तो ज़रा कम-ज़्यादा होता ही है।

'जैसा मिले वैसा' निभा लेना

एक व्यक्ति का संसार मुंबई में फ्रेक्चर होने जा रहा था। पति ने निजी तौर पर दूसरा संबंध रखा होगा और उसकी पत्नी को पता चल गया, उससे जबरदस्त झगड़े होने लगे। फिर उस बहन ने मुझे बताया, 'ये ऐसे हैं', मुझे क्या करना चाहिए? मैं भागना चाहती हूँ।' मैंने कहा, 'एक पत्नीव्रत का नियम पालन करें, ऐसा मिल जाए तो भाग जाना। वर्ना, दूसरा कौन सा अच्छा मिलेगा? यों तो एक ही रखी है न?' तब कहने लगी, 'हाँ, एक ही।' तब मैंने कहा, 'बहुत अच्छा, लेट गो कर (चला ले)। बड़ा मन कर ले। तुझे इससे अच्छा कोई नहीं मिलेगा।'

एक बहन कहती थी कि मुझे पति अच्छा नहीं मिला इसलिए मेरी ज़िंदगी बिगड़ी। मैंने कहा, 'अच्छा मिला होता तो ज़िंदगी सुधर जाती क्या?

क्या तू जानती नहीं थी कि यह कलियुग है?' कलियुग में तो पति भी अच्छा नहीं मिलता और पत्नी भी अच्छी नहीं मिलती। यह सारा माल ही कचरा है न! माल पसंद करने जैसा होता ही नहीं। इसलिए इसे पसंद नहीं करना है, इसका तो तुझे हल लाना है। यह कर्मों का हिसाब चूकता करना है, उसका हल लाना है। तब लोग मज़े से मानो पति-पत्नी होना चाहते हैं। अरे भाई, हल ला न यहाँ से! किसी भी तरह से क्लेश कम हो, ऐसे हल लाना है।

प्रश्नकर्ता : दादा, इसे ऐसा संयोग मिला है, तो वह हिसाब का ही मिला है न?

दादाश्री : हिसाब बिना तो यह मिलता ही नहीं न!

पिंजरे में खाने की चीज़ रखें, उसके बाद जितने पकड़ में आ गए उतने सही! तो लालची फँस जाते हैं इस दुनिया में। लालच ही नहीं रखना है न! आपको जो मिला, उस पर आप रौब जमाओ!

ये सभी सुख के लिए शादी करते हैं, परंतु भीतर दु:खी होते हैं बेचारे! क्योंकि सुखी होना, दु:खी होना, वह अपने हाथ की बात नहीं है। वह पूर्वजन्म में किए हुए कर्म के अधीन ही है, उसमें कोई चारा नहीं है। वे भुगतने ही पड़ेंगे। संसार है इसलिए घाव तो लगेंगे ही न! और पत्नी भी कहेगी सही कि अब ये घाव नहीं भरेंगे। लेकिन संसार में पड़ने से वापस घाव भर जाते हैं। मूर्च्छितपना है न! मोह की वजह से मूर्च्छितपना है। मोह की वजह से घाव भर जाते हैं। यदि घाव नहीं भरते तब तो वैराग्य ही आ जाता न! मोह किसे कहते हैं? बहुत सारे अनुभव हुए हों पर भूल जाते हैं। 'डिवोर्स' लेते समय तय करते हैं कि अब किसी स्त्री से शादी नहीं करनी है, तब भी फिर से साहस करता है!

यानी पति भी वापस अच्छी पत्नी ढूँढता है। अरे भाई, ऐसे समय में अभी जैसे-तैसे *निकाल* कर देना है। यहाँ गाड़ी में बैठते हैं न, तो साथ बैठने वाला भी सीधा, अच्छा नहीं होता। उसे ज़रा सा आप छेड़ो तब पता चलता है। इसलिए अभी किसी भी तरह से यह गाड़ी पार कर लेना है। अभी क्या यह फर्स्ट क्लास है? सेकन्ड क्लास हैं ये सभी! जो फर्स्ट क्लास पेसेन्जर, वे जो पति थे, वे अलग थे। तब महिलाएँ भी सीता जैसी थी। पुरुष राम जैसे थे तब तो, अभी ये क्या सब फर्स्ट क्लास का माल है?

पति दूसरा करोगी फिर भी वैसे का वैसा ही होगा! उसके बजाय जो है उसे निभाकर काम *निकाल* लेना चाहिए। क्या कहती हो? हं, अभी तो कलियुग का माल है, तो किसी भी तरह से क्लेश न बढ़े, ऐसे *निकाल* कर देना है। क्लेश तो होंगे ही, परंतु बढ़े नहीं ऐसे *निकाल* कर देना है।

अबोला यानी बोझ

प्रश्नकर्ता : (क्लेश के समय) अबोला लेकर बात को टालने से उसका *निकाल* हो सकता है?

दादाश्री : नहीं हो सकता। आपको तो सामने वाला मिले तो 'कैसे हो? कैसे नहीं?', ऐसा कहना चाहिए। सामने वाला ज़रा शोर मचाए तो आपको ज़रा धीरे से 'समभाव से *निकाल*' करना चाहिए। उसका *निकाल* तो करना ही पड़ेगा न, कभी न कभी? अबोला करने से क्या *निकाल* हो गया? वह *निकाल* नहीं होता, इसलिए तो अबोला खड़ा होता है। अबोला यानी बोझा, जिसका *निकाल* नहीं हुआ उसका बोझा। आपको तो तुरंत उसे रोककर कहना चाहिए, 'रुको न, मेरी कोई भूल हुई हो तो मुझे कहो, मेरी बहुत भूलें होती हैं। आप तो बहुत होशियार हों, पढ़े-लिखे हो इसलिए आपकी नहीं होती, पर मैं कम पढ़ी-लिखी हूँ

इसलिए मेरी बहुत भूलें होती हैं', ऐसा कहोगे तो वह खुश हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : ऐसा कहने पर भी वह नरम नहीं पड़ें तब क्या करना चाहिए?

दादाश्री : नरम नहीं पड़े तो आपको क्या करना है? आपको तो कहकर छोड़ देना है। फिर क्या उपाय है? कभी न कभी तो नरम पड़ेंगे। डाँटकर नरम करोगे तो उससे कोई नरम नहीं होता। आज नरम दिखेगा, पर वह मन में *नोंध* रखेगा और आप जब नरम हो जाएँगे, उस दिन वह सारा वापस निकालेगा। यानी जगत् बैर वाला है। कुदरत का नियम ऐसा है कि हर एक जीव अंदर बैर रखता ही है। भीतर परमाणुओं को संग्रह करके रखते हैं। इसलिए आपको पूरा केस ही ख़ारिज कर देना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : हम सामने वाले को अबोला तोड़ने के लिए कहते हैं कि 'मेरी भूल हो गई, अब माफी माँगती हूँ', तो भी वह अधिक अकड़ने लगे तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : तो आपको कहना बंद कर देना चाहिए। उसका स्वभाव टेढ़ा है, ऐसा जानकर चूप हो जाना चाहिए आपको। उसे ऐसा कुछ उल्टा ज्ञान हो गया होगा कि 'बहुत झुके नादान' वहाँ फिर दूर ही रहना चाहिए। फिर जो हिसाब हो, वह सही। परंतु जितने लोग सरल हों न, वहाँ तो हल ला देना चाहिए। आपके घर में कौन-कौन सरल हैं और कौन-कौन टेढ़ें हैं, वह नहीं समझ में आता?

प्रश्नकर्ता : सामने वाला सरल नहीं हो तो उसके साथ हमें व्यवहार तोड़ देना चाहिए?

दादाश्री : नहीं तोड़ना चाहिए। व्यवहार तोड़ने से टूटता नहीं है। व्यवहार तोड़ने से टूटे, ऐसा है भी नहीं। इसलिए आपको वहाँ मौन रहना चाहिए कि किसी दिन चिढ़ेगा तब अपना हिसाब पूरा हो जाएगा। आप मौन रखेंगे तो किसी दिन वह चिढ़ेगा और खुद ही बोलेगा कि, 'आप बोलते नहीं हो, कितने दिनों से चुपचाप रहते हो!' ऐसा चिढ़ें, यानी अपना (काम) पूरा हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : यह 'न बोलने की कला' की बात कीजिए न।

दादाश्री : न बोलने की कला, वह तो दूसरों को आए ऐसी नहीं है। बहुत कठिन हैं वे कलाएँ। वह तो सामने वाला आए न, उससे पहले उसके शुद्धात्मा के साथ बातचीत कर लेनी चाहिए और उसे एकदम शांत कर देना चाहिए और उसके बाद आपको बोले बिना रहना चाहिए, उससे आपका सारा काम पूरा हो जाएगा। वह कठिन कला है। इसलिए जब आपका ऐसा समय आए तब मुझ से पूछ लेना न, सबकुछ बता दूँगा। वह सीढ़ी आए तब सीखना। परंतु अभी तो, घर में बिल्कुल नहीं लड़ना है। घर के लोग अपने कहलाते हैं। उनमें से किसी को दुःख दिया, तो वह भयंकर नर्क में जाने की निशानी है! विषमभाव से जगत् खड़ा हुआ है, समभाव से निकल जाएगा।

सही समझ, समभाव से निकाल की

प्रश्नकर्ता : समभाव से *निकाल* नहीं हो पाता।

दादाश्री : नहीं होता, तो क्या होता है?

प्रश्नकर्ता : अब मेरा ऐसा है, कि फाइल नं-2 मुझसे एकदम विरुद्ध है। इसलिए उसके साथ मेरा संघर्ष होता है और समभाव से *निकाल* नहीं हो पाता।

दादाश्री : लेकिन आपको तो चंदूभाई से कहना है कि, 'समभाव से *निकाल* करो न!'

लेकिन अगर बहुत गाढ़ होगा, निकाचित होगा तो देर लगेगी।

प्रश्नकर्ता : औरों के साथ तो सहज रूप से हो जाता है लेकिन यहाँ पर नहीं हो पाता।

दादाश्री : संभाल-संभालकर करो न अब। जैसे ये पट्टी उखाड़ते हैं न, जलन नहीं हो उस तरह धीरे से।

प्रश्नकर्ता : हमारे तो फाइल के साथ वैचारिक मतभेद बढ़ते जा रहे हैं।

दादाश्री : लेकिन मतभेद क्यों बढ़ते जा रहे हैं? आपको समभाव से *निकाल* करने की आज्ञा का पालन करना चाहिए न?

प्रश्नकर्ता : लेकिन समभाव से *निकाल* करने की आज्ञा का पालन करने के बावजूद भी यही स्थिति रहा करती है।

दादाश्री : नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। समभाव से *निकाल* करना है, उस आज्ञा का पालन करोगे, तो कुछ भी बाकी नहीं रहेगा। उस वाक्य में इतना अधिक वचनबल है कि बात न पूछो!

प्रश्नकर्ता : लेकिन समभाव से *निकाल* करने में एकपक्षीय विचारणा ही हुई न?

दादाश्री : उसे एकपक्षीय नहीं कहना है। आपको तो, समभाव से *निकाल* करना है, इतना ही तय करना है। फिर वह अपने आप ही होता रहेगा। नहीं हो पाए फिर भी प्याज़ की एक परत तो निकल ही जाएगी। फिर प्याज़ की दूसरी परत दिखेगी। परंतु दूसरी बार में दूसरी परत निकलेगी, ऐसा करते-करते प्याज़ खत्म हो जाएगा। यह तो विज्ञान है! यह तुरंत ही फलदायी है, एक्ज़ेक्टनेस है। ये चंदूभाई क्या करते हैं, वह आपको देखते रहना है। सामने वाले व्यक्ति में शुद्धात्मा देखना है और फाइल के तौर पर समभाव से *निकाल* करना है!

प्रश्नकर्ता : हाँ, लेकिन समभाव से *निकाल* करने में हमें व्यवहारिक मुश्किलें आती हों तो...

दादाश्री : व्यवहारिक मुश्किलें तो आएँगी और जाएँगी। एब एन्ड टाइड (ज्वार-भाटा), पानी बढ़ता है और घटता है, समुद्र में रोज़ दोनों समय बढ़ता-घटता रहता है।

प्रश्नकर्ता : हमारे मतभेद उस कक्षा के हैं कि साथ रह ही नहीं सकते।

दादाश्री : फिर भी समभाव से *निकाल* करके लोग इतनी अच्छी तरह से रह पाए हैं न! और अलग होकर भी क्या फायदा होगा?

प्रश्नकर्ता : वह समझने को तैयार ही नहीं होती, किसी भी सगे-संबंधी के साथ जमता ही नहीं है, किसी के साथ व्यवहार ही नहीं रखना है, उस तरह रहना उसे अच्छा लगे तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : कोई तरीका नहीं रखना है, यह देखना है कि किस तरह रहा जाता है। डिज़ाइन का रास्ता नहीं है यह। यह ज्ञान डिज़ाइन वाला नहीं है। कैसे रहा जाता है, वह देखना है।

प्रश्नकर्ता : चाहे वह तरीका व्यवहारिक तौर पर योग्य हो या अयोग्य?

दादाश्री : आपको वह नहीं देखना है। आपको तो इस तरह से रहना है। शांति चाहिए तो, आनंद चाहिए तो इस तरह से रहो। वर्ना फिर आप वह तरीका अपनाओ। डिज़ाइन बनाओगे तो मार खाओगे। दूसरा कुछ नया नहीं मिलने वाला। अज्ञानता की निशानी यह है कि मार खाता है और कुछ नहीं! इसे ओवरवाइज़ (अत्याधिक

सयाना) कहते हैं। ऊपर से अपनी अक्ल लड़ाने जाता है। तत्त्वदृष्टि मिलने के बाद कुछ और क्यों देखना? (तत्त्वदृष्टि) नहीं मिली होती तो बाकी सब था ही न!

प्रश्नकर्ता : लेकिन क्या फिर इसे कर्म बंधन मानकर सहन करते रहना है, इस परिस्थिति को?

दादाश्री : कुछ भी नहीं मानना है। मानना क्या है आपको? आप 'ज्ञाता-द्रष्टा', देखना ही है। क्या होता है, उसे देखना है, वॉट हैपन्स! कल घर पहुँचने के बाद खाना मिला था या नहीं मिला था?

प्रश्नकर्ता : खाना तो मिलता ही है!

दादाश्री : तो क्या परेशानी है? खाना मिलता है, सोने की जगह मिलती है। फिर और क्या चाहिए? पत्नी बात नहीं करें तो कहना, 'रह अपने घर, आज उस तरफ सो जा।' वह नहीं बोलें तो उसे क्या 'बा' (माता) कहेंगे? नहीं कह सकते। इसलिए नई झंझट तो करनी ही नहीं है। एक ही जन्म ज्ञानी की आज्ञा के अनुसार चलो तो मज़े हो जाएँगे। और वे खुद के सुख सहित होते हैं।

प्रश्नकर्ता : किसी भी संयोग में समभाव से ही *निकाल* करना है?

दादाश्री : समभाव से *निकाल* करना, इतना ही आपका धर्म है। कोई फाइल ऐसी आ गई, तो आपको तय करना है कि समभाव से *निकाल* करना है। अन्य फाइलें तो एडजस्टमेन्ट वाली होती हैं, उनके लिए तो कोई बहुत ज़रूरत नहीं पड़ती।

प्रश्नकर्ता : लेकिन जहाँ टोटल डिसएडजस्टमेन्ट (सभी प्रकार से प्रतिकूल) हो, तब फिर वहाँ क्या करना चाहिए?

दादाश्री : समभाव से *निकाल* करने का भाव आपको मन में तय करना है। 'समभाव से *निकाल* करना है' इतने ही शब्दों का उपयोग करना है!

प्रश्नकर्ता : सामने वाला कोई एडजस्टमेन्ट नहीं ले तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : वह नहीं ले तो आपको वह नहीं देखना है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन फिर हमें क्या करना चाहिए? हमें अलग हो जाना चाहिए?

दादाश्री : आपको देखते रहना है। और कुछ तो उसके या आपके ताबे में नहीं है। अर्थात् जो भी हो रहा है, उसे आप देखो! अलग हो जाओ तो भी हर्ज नहीं है। अपना ज्ञान ऐसा नहीं कहता कि आप अलग मत होना या अलग हो जाना, ऐसा भी नहीं कहता। क्या होता है, उसे देखते रहना है। अलग हो जाओगे तो भी कोई विरोध नहीं करेगा कि क्यों आप अलग हो गए और साथ रहोगे तो भी कोई आपत्ति नहीं उठाएगा। लेकिन यह डिसएडजस्टमेन्ट, वह गलत चीज़ है!

प्रश्नकर्ता : यदि स्वभाव ही विरोधी हो तो फिर वह चेन्ज किस तरह हो सकता है?

दादाश्री : विरोधी स्वभाव को ही संसार कहते हैं। संसार का अर्थ ही है, विरोधी स्वभाव! और उस विरोधी का *निकाल* नहीं करेंगे तो विरोध तो रोज़ ही आएगा और अगले जन्म में भी आएगा! उसके बजाय यहीं पर हिसाब चुका दो, उसमें क्या बुरा है? आत्मा प्राप्त होने के बाद हिसाब चुका सकते हैं।

'आज्ञा का पालन करना है' इतना बोलना है, बस। अन्य एडजस्टमेन्ट तो किसके हाथ में है? व्यवस्थित के हाथ में है!

आप 'समभाव से *निकाल* करना है' ऐसा

तय करोगे, तो आपका सब ठीक हो जाएगा। इन शब्दों में जादू है। वह अपने आप ही सारा निबेड़ा ला देगा।

प्रश्नकर्ता : समभाव से *निकाल* करना यानी सामने वाला व्यक्ति जो कुछ भी कहे, उसकी हाँ में हाँ मिलाएँ?

दादाश्री : वह कहे कि 'यहाँ बैठिए' तो बैठना। वह कहे 'बाहर चले जाइए' तो बाहर चले जाना। वह व्यक्ति कुछ भी नहीं करता, यह तो व्यवस्थित करता है। वह बेचारा तो निमित्त है! बाकी, 'हाँ में हाँ' नहीं मिलाना है, लेकिन चंदूभाई 'हाँ' कहते हैं या 'ना' कहते हैं, वह 'आपको' देखना है! और फिर 'हाँ' में 'हाँ' मिलाना ऐसी कोई सत्ता आपके हाथ में नहीं है। व्यवस्थित आपसे क्या करवाता है, वह देखना है। यह तो आसान बात है, लोग इसे उलझा देते हैं।

प्रश्नकर्ता : परंतु सामने वाला व्यक्ति अलग होने में खुश हो, तो क्या हमें अलग हो जाना चाहिए?

दादाश्री : वह तो अच्छा है, बहुत अच्छा है। कहीं और तो मार-मारकर दम निकाल देते हैं! आपको मारा तो नहीं न! तो बहुत अच्छा! 'मेरे तो धन्यभाग्य', कहना!

प्रश्नकर्ता : फिर उसे तो अपने तरीके से रहना है।

दादाश्री : आप कल्पनाएँ क्यों करते हो कि वह ऐसा करेगी?

प्रश्नकर्ता : वे कर ही रही हैं, उसका अनुभव हो ही रहा है।

दादाश्री : नहीं। अनुभव हो रहा हो, तब भी आपको कल्पना नहीं करनी है! इस कल्पना से ही सब खड़ा हो गया है, सारा जाल-जंजाल! बिल्कुल सीधा है और समभाव से *निकाल* करने की हमारी आज्ञा का पालन किया जाए न, तो एक बाल जितनी भी मुश्किल नहीं आती और वह भी सभी साँपों के बीच! और वह तो, नागिन नहीं है, वह तो स्त्री है न! और कुछ नहीं, यह तो आपने ही यह सब गाढ़ किया है!

अपने यहाँ तो डिवोर्स होते होंगे?

प्रश्नकर्ता : डिवोर्स ऐसे किन संयोगों में होता है या डिवोर्स लिया जा सकता है?

दादाश्री : अरे! ये डिवोर्स तो अभी निकला। पहले तो डिवोर्स थे ही कहाँ?

प्रश्नकर्ता : अभी तो होते हैं न! इसलिए किन संयोगों में ये सब करना चाहिए?

दादाश्री : कुछ भी मेल न बैठता हो, तो अलग हो जाना अच्छा है। एडजस्टेबल ही न हो, तो अलग हो जाना अच्छा है और नहीं तो हम तो एक ही चीज़ कहते हैं, 'एडजस्ट एवरीव्हेर'। क्योंकि गुणाकार करने मत जाना कि 'ऐसा है और वैसा है'।

प्रश्नकर्ता : ये अमरिका में जो डिवोर्स लेते हैं, वह खराब कहा जाएगा? बनती न हो तो वे लोग डिवोर्स ले लेते हैं वह?

दादाश्री : डिवोर्स लेने का अर्थ ही क्या है? ये क्या कोई कप-रकाबियाँ हैं? कप-रकाबियाँ बाँटे नहीं जा सकते, इनका डिवोर्स नहीं कर सकते, तो इन पुरुषों का,-महिलाओं का डिवोर्स तो किया जाता होगा? इन लोगों के लिए, अमरिकनों के लिए चलेगा, लेकिन आप तो इन्डियन (भारतीय) हैं। जहाँ एक पत्नीव्रत और एक पतिव्रत के नियम थे। एक पत्नी के अलावा दूसरी महिला को देखना

नहीं ऐसा कहते थे, ऐसे विचार थे, वहाँ डिवोर्स के विचार शोभेंगे?

कुत्ते-जानवर सभी डिवोर्स वाले हैं और फिर ये मनुष्य उसमें आ गए तो फिर फ़र्क क्या रहा? अपने हिन्दुस्तान में तो एक बार शादी करने के बाद, दूसरी शादी नहीं करते थे। यदि पत्नी का देहांत हो जाता था तो भी शादी नहीं करते थे, ऐसे पुरुष थे। कितने पवित्र व्यक्ति जन्मे थे!

हम इन्डियन, एक-दूसरे को निभा लेते हैं

प्रश्नकर्ता : यहाँ अमरिका में सभी ज़रा सा कुछ हो जाए, तो तुरंत तलाक ले लेते हैं, तो उनमें पिछले जन्म का भय रह गया होगा, इसलिए वे ले लेते हैं?

दादाश्री : नहीं, बेहोशी में, भान ही नहीं है न! इन फॉरेनर्स (परदेशियों) का सबकुछ बदलता रहता है। हम क्या फॉरेनर्स हैं? हम तो आर्यप्रजा हैं। क्या हैं?

प्रश्नकर्ता : आर्यप्रजा हैं! हाँ, अवश्य।

दादाश्री : एक बार जैसा मिला और यदि अंधा पति मिल जाता था तो चला लेती थी, आर्यप्रजा! अगर शादी के बाद अंधा हो जाए, तब क्या करेंगे? चला नहीं लेना पड़ेगा? परंतु ये फॉरेन वाले नहीं चलाते, आपको तो चलाना पड़ेगा। आफटर ऑल ही इज़ ए गुड मैन (आखिर में तो वे भले आदमी हैं)! मैं बोलता था, वह अप्रोपिएट (योग्य) जगह पर अप्रोपिएट बोला जाता था। तो एक भाई ने यह बात पकड़ ली थी। आफटर ऑल (आखिर में) तो उन्हें बहुत पसंद आया।

अपने संस्कार हैं, ये तो। लड़ते-लड़ते अस्सी साल बीत जाते थे दोनों के, लेकिन फिर भी मृत्यु के बाद तेरहवीं के दिन शय्यादान करती थी। शय्यादान में चाची याद करके, चाचा को यह पसंद था, वह पसंद था, सबकुछ मुंबई से मंगवाकर रखती थी। तब एक बेटा था न, वह चाची से कह रहा था, अस्सी साल की चाची से, 'माँजी, चाचा ने तो आपको छः महीने पहले गिरा दिया था। उस समय तो आप चाचा के लिए उल्टा बोल रही थी।' लेकिन फिर भी, 'ऐसे पति दोबारा नहीं मिलेंगे', ऐसा कहती थीं बुढ़ी माँजी। पूरी ज़िंदगी के अनुभव में से खोज़ निकालती थी कि अंदर से तो बहुत अच्छे थे। यह प्रकृति टेढ़ी थी परंतु अंदर से...

प्रश्नकर्ता : अच्छे थे।

दादाश्री : यानी ऐसे पति दोबारा नहीं मिलेंगे, ऐसी परख करना आता है। तब कितनी ज़्यादा परख की होगी। पता नहीं चले कि भाई, अंदर से कैसे थे वे! यह सब तो प्रकृति है, चिढ़ती है, ऐसा सब है। लेकिन ये अपने हिन्दुस्तान के संस्कार हैं! माँजी क्या कहती हैं? गिरा दिया था, वह बात अलग थी, परंतु मुझे ऐसे पति नहीं मिलेंगे! यह है हिन्दुस्तान का आर्य नारीत्व!

लोग हमें याद करें, ऐसा अपना जीवन होना चाहिए। हम इन्डियन हैं, हम फॉरेनर्स नहीं हैं। हम पत्नी को निभा लेते हैं। पत्नी हमें निभा लेती है, यों करते-करते अस्सी साल तक चलता है। जबकि वह (फॉरेन की महिला) तो एक घंटा भी नहीं निभाती और वह (फॉरेन का पुरुष) भी घंटा भर नहीं निभाता। हम संस्कारी पुरुष हैं, हम आर्यप्रजा हैं। अनाड़ीपन दिखता है, वह बहुत बुरा दिखता है। उनके आचार-विचार भोजन वगैरह सभी में बदलाव, अनार्य जैसा जबकि अपना भोजन आर्य का। परंतु वे अनार्य तो अनाड़ी नहीं हुए हैं लेकिन हमारे यहाँ लोग अनाड़ी हो गए। तो यह

सब हमें शोभा नहीं देता। जो शोभा नहीं देता, वह कार्य करेंगे तो अपनी जो डिज़ाइन (रूप-रेखा) थी, वह बदल जाएगी। आर्य अनुसार जो डिज़ाइन थी, वह भी बदल जाएगी। अत: जीवन बदलना चाहिए या नहीं बदलना चाहिए, बहन?

प्रश्नकर्ता : बदलना चाहिए।

दादाश्री : इसी को मैं बदलने वाला हूँ। जीवन जीना सीखो, सुखी हो जाओ सभी। बच्चे अच्छे निकले, बच्चों में अच्छे संस्कार आएँ।

प्रश्नकर्ता : लगता है आपने हमारा कुछ तो देख लिया है।

दादाश्री : हमें ज्ञानियों को अंदर सबकुछ दिखाई देता हैं, अंदर दिखाई देता है सबकुछ, यह सब क्या चल रहा है, वह! इसलिए फिर हम बता देते हैं सबकुछ और फिर बदलाव कर देते हैं।

डिवोर्स रोकने का रहस्य, 'प्रतिक्रमण'

(ये हिन्दुस्तान के लोगों ने) पिछले जन्म में प्रतिक्रमण किए हों तो चला लेते हैं।

प्रश्नकर्ता : तो पिछले जन्म में प्रतिक्रमण करने के लिए निमित्त उसे (फॉरेन वाले को) मिला होगा न कोई?

दादाश्री : उनके वहाँ प्रतिक्रमण नहीं होते न, इसलिए चला नहीं पाते जबकि अपने यहाँ तो पिछले जन्म में प्रतिक्रमण किए ही होते हैं, इसलिए चला लेते हैं।

प्रश्नकर्ता : यह नई बात है, दादा। पिछले जन्म में प्रतिक्रमण किए हों, यह तो नया ही आया आज।

दादाश्री : इसीलिए फिर चला लेते हैं न।

प्रश्नकर्ता : तो (हिन्दुस्तान के लोगों ने) प्रतिक्रमण किए होंगे उसकी समझ कहाँ से आई, प्रतिक्रमण करने की? पिछले जन्म में प्रतिक्रमण करने की समझ तो किसी ज्ञानी पुरुष ने ही दी होगी न?

दादाश्री : उससे भी पिछले जन्मों से सीखते ही आए हैं। डेवलप होते-होते आए हैं न!

प्रश्नकर्ता : हाँ, डेवलप होते ही आए हैं, सही है। दादा, अपने यहाँ भी ऐसा है न, कि जिनके प्रति पिछले जन्म में प्रतिक्रमण न हुए हों, तो फिर वे इस जन्म में नहीं चला पाते, विरोधी हो जाते हैं?

दादाश्री : नहीं चलाते, फिर लड़ाई होती है।

प्रश्नकर्ता : लड़ाई हो जाए। उसके बाद उसका क्या करना चाहिए? फिर यहाँ अब प्रतिक्रमण करने चाहिए?

दादाश्री : लड़ने के बाद प्रतिक्रमण करते हैं। आखिर में करते तो हैं ही फिर। रात को नींद कैसे आएगी उन्हें? जो प्रतिक्रमण नहीं समझते वे तो करते ही नहीं अभी भी। हिन्दुस्तान के लोगों ने प्रतिक्रमण किए थे, इसलिए ये लोग चला लेते हैं। दूसरे देश के, किसी अन्य देश के नहीं चलाते।

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण सिर्फ हिन्दुस्तान ही समझता है, बाकी लोग प्रतिक्रमण समझते ही नहीं हैं। प्रतिक्रमण के बारे में तो पता ही नहीं है।

दादाश्री : हाँ। बाकी तो समझते ही नहीं न! बाकी जगह तो 'भगवान करते हैं' इसलिए फिर...

प्रश्नकर्ता : हाँ, इतना तो कहता है 'इक्स्क्यूज़ मी, इक्स्क्यूज़ मी' वह बात-बात में कहता रहता है।

दादाश्री : वह अलग है। आपको (प्रतिक्रमण की बात) समझ में बैठ गई?

प्रश्नकर्ता : फिट हो गई बिल्कुल। स्क्रू टाइट हो गए सब। नट-बॉल्ट टाइट हो गए सभी।

दादाश्री : क्यों चला लेते हैं हिन्दुस्तान के लोग? नरम हैं? पागल हैं? चक्कर हैं? घनचक्कर हैं? तब कहते हैं, 'नहीं, ऐसा वैसा कुछ नहीं है।' प्रतिक्रमण किए हुए हैं।

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण किए हुए हैं, वह पूंजी है। वह प्रतिक्रमण करने वाले की पूंजी है, वर्ना नहीं चलाते।

दादाश्री : अपने हिन्दुस्तान के पति, 'इडली ज़रा कच्ची है। क्या करोगे?' तो कहते हैं, 'चला लेंगे, चलेगी।' देखो न, कच्ची इडली हिन्दुस्तान के लोग खा लेते हैं। चला लेते हैं न?

प्रश्नकर्ता : पति-पत्नी रोज़ झगड़ते हैं फिर भी पूरी ज़िंदगी चला लेते हैं न, दादा?

दादाश्री : चला लेते हैं न! देखो न! यह भी आश्चर्य ही है न! लड़ाई करते..

प्रश्नकर्ता : झगड़ते हैं और उपर से सबकुछ करते हैं।

दादाश्री : पर चला लेते हैं न। अभी भी लोग क्या समझते हैं कि यह प्रजा बिल्कुल गलत है, प्रजा ऐसी ढीली है। ऐसा नहीं चला लेना चाहिए। पर चला रहा है और इसके पीछे (का कारण) खुद को भी पता नहीं चलता कि मैं क्यों चला लेता हूँ ऐसा! क्यों चला लेता हूँ, वह खुद को पता नहीं चलता। यह मैं समझा रहा हूँ न, कि प्रतिक्रमण किए हुए हैं इसलिए ये चला लेते हैं।

प्रश्नकर्ता : सही है।

दादाश्री : झगड़ता भी है और फिर प्रतिक्रमण भी करता है। आपको वाक्य फिट हो गया?

प्रश्नकर्ता : एकदम फिट हो गया, दादा।

दादाश्री : ऐसा! ओहोहो! आपको फिट हो गया यह वाक्य?

प्रश्नकर्ता : एकदम, हमने इसका अनुभव किया हो, ऐसा लगता है। यह रोज़ होता है, देखते हैं, चला लेते हैं, उसके पीछे का कारण क्या है? तो वह एक्ज़ेक्ट निकला, दादा।

दादाश्री : प्रतिक्रमण (हो चुके हैं) एक्ज़ेक्ट निकला। यह लोगों का डेवलपमेन्ट है। जितना वह डेवलपमेन्ट हैं उतना तो चला ही लेते हैं। फिर डेवलपमेन्ट न हो तो झगड़ते हैं वहाँ! वहाँ झगड़ते हैं, 'मुझे पसंद नहीं है' कहेंगे।

प्रश्नकर्ता : कई लोगों की तो इस तरह से समझने की तैयारी नहीं होती। यदि समझ जाए, तो फिर उसका स्पष्टीकरण मिल जाता है। फिर बाद में परेशानी ही नहीं होती।

दादाश्री : हाँ, समझ में आया कि हल आ गया। फॉरेन के सभी देश इकट्ठा हो जाएँ और ऐसा कहें कि 'ये लोग क्यों चला लेते हैं और आप क्यों नहीं चलाते?' तब कहेंगे, 'निर्बलता है, उनकी विकनेस है'।

प्रश्नकर्ता : हाँ, ऐसा ही कहेंगे न! कायर हुए हैं।

दादाश्री : कायर हैं! अरे घन चक्कर, यह डेवलपमेन्ट है!

प्रश्नकर्ता : चला लेना, वह निर्बलता है?

दादाश्री : निर्बलता नहीं, यह बताया न! प्रतिक्रमण की वजह से हुआ है न!

प्रश्नकर्ता : नहीं चला पाते, वह निर्बलता है वास्तव में तो।

दादाश्री : हाँ, वास्तव में वह निर्बलता है। लेकिन वे लोग तो खुली निर्बलता देखते हैं न!

प्रश्नकर्ता : हाँ, यानी दिखाई देती है, वह अलग बात है। तो दादा, आप हम सभी का कितना सब चला लेते हैं?

दादाश्री : पर मैंने भी प्रतिक्रमण किए हैं न, बहुत ज़्यादा किए हैं न!

प्रश्नकर्ता : कितने सारे किए होंगे! पूरी ज़िंदगी किए है इसलिए।

दादाश्री : हाँ, बहुत ज़्यादा और दोष दिखाई देंगे तो करेंगे न! दोष दिखाई नहीं देंगे तो करेंगे ही कैसे? हमें तो बहुत से दोष दिखाई देते हैं, इसलिए मेरी दृष्टि सूक्ष्म हो चुकी है, अतः मुझे प्रतिक्रमण करने ही पड़ेंगे न! चारा ही नहीं है न!

प्रश्नकर्ता : और इतने अधिक प्रतिक्रमण हुए यानी यह जो स्थिति आई, वह मुख्य रूप से इसी कारण से।

दादाश्री : हाँ! वे प्रतिक्रमण हो गए इसलिए अब चला लेते हैं। चला लेना है और वह भी संतोषपूर्वक चला लेना है। कैसे? संतोषपूर्वक चला लेते हैं।

सामने वाला तोड़े, तब तू जोड़ते रहना

एक चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट आए थे। वे मुझसे कह रहे थे कि साड़े तीन हज़ार रुपए पगार (1970 में) मिलती है। तब मैंने कहा, 'बहुत अनुभव है इसलिए?' तब कहने लगे, 'हाँ, अनुभव बहुत, जबरदस्त।' मैंने कहा, 'कभी ज्ञान (ज्ञानविधि) लेकर जाना, तो काम अच्छा चलेगा! बाकी साड़े तीन हज़ार रुपए पगार है तो तुम्हें और कोई परेशानी ही नहीं है न! साड़े तीन हज़ार कमाते हो तो इतने सारे रूपयों का करते क्या हो फिर?' तब कहने लगे, 'अभी तो महँगाई में कैसे चलेगा?' तब मैंने कहा, 'परंतु क्या-क्या करते हो, थोड़ा बहुत बताओ मुझे।' तब कहने लगे, 'पंद्रह सौ तो मेरी पत्नी को देता हूँ।' तब मैं समझा, रसोई के लिए देते होंगे, तो मैंने कहा, 'रसोई के लिए तो देने ही पड़ेंगे न! उसमें हर्ज़ नहीं, पंद्रह सौ दो तो।' तब वे फिर से कहने लगे, 'नहीं, ऐसा नहीं है, रसोई के लिए नहीं देता। पंद्रह सौ तो मेरी वाइफ को देने में जाते हैं।' पोल खुल गई यह! कितनी अक्ल है उसमें वह निकली यह! हाँ, अब आप सी.ए. हो! सी.ए. अलग रहते हैं और पत्नी अलग रहती है। आप जैसे सी.ए. होने वाले की पत्नी अलग रहती है, बाहर आपकी कितनी आबरू होगी? आबरू तो चली जाएगी न फिर या नहीं जाएगी? फिर मैंने पूछा, 'क्यों अलग रहती है?' तब कहने लगे, 'मुझसे मेल नहीं बैठता'। मैंने कहा, 'बच्चा है'? तब कहने लगे, 'एक बच्चा है, उसके साथ रहता है। उसे पंद्रह सौ देता हूँ और बाकी मुझे खाने-पीने के लिए चाहिए सब।' मैंने कहा, 'बहुत अक्लमंद सी.ए. होने वाले, दूसरों की समस्या तो दूर कर देते हैं, पर ये तो अपने हिसाब में भूल की, आप एक व्यक्ति का समाधान नहीं कर सकते? एक महिला, आपके साथ जिसने शादी की है, उस महिला का समाधान नहीं कर सकते? तुम चार्टर्ड अकाउन्टन्ट हो! आप तो कितने होशियार हों'। मैंने डाँटा। मैंने कहा, 'ये सी.ए. किसने बनाया? कैसे पास हो गए? नकल करके पास हुए थे? सी.ए. तो कितने होशियार होते हैं! किसी और आस-पास वाले को अगर समस्या हुई हो तो उसका हल कर दें, ऐसे होते हैं और आपने यह घर में ही फ्रेक्चर कर दिया! संबंध पूरी तरह से तोड़ दिया?' तब कहने लगे, 'दादाजी, आप उन्हें नहीं पहचानते, बहुत ही खराब पत्नी है' वह।

मैंने कहा, 'यह बात भी सही है, पर मैं अभी उनसे पूछकर आऊँगा कि पति कैसे हैं, तो क्या कहेगी वे?

प्रश्नकर्ता : वे भी ऐसा ही कहेगी, 'खराब है'।

दादाश्री : 'बिल्कुल नालायक है', ऐसा कहेगी। उसके बाद उसे विचार आया कि 'अरे, वे भी मुझे नालायक ही कहेंगी?' फिर मैंने कहा, 'अभी और कोई विशेषण है?' तब कहने लगे, 'नहीं, लेकिन वह बात ही करने लायक नहीं है'। मैंने कहा, 'शर्म नहीं आती? आप इतने पढ़े-लिखे हो और पत्नी चली गई।' मैंने कहा, 'आप ही न्याय करो न?' तब कहने लगे, 'वे तो मुझे ज़्यादा खराब कहेंगी।' मैंने कहा, 'तो इसका न्याय क्या?' खराब करके, यों किसलिए घूमते रहते हो? इस महिला के साथ किस वजह से आपका ऐसा हुआ?' तो कहने लगे, 'उसे सुधारने गया था।' मैंने कहा, 'किसी को सुधारना नहीं है! ये सुधारने में कहाँ लग गए हो तुम? तुम्हारा काम है उतना बताओ न उसे। फिर सुधारने में कहाँ लग गए?' तब कहने लगे, 'सुधारूँगा नहीं तो वे कब सुधरेगी?' मैंने कहा, 'देखो सुधारने से प्रकृति नहीं बदलती। तुम सुधारने जाते हो न तो तुम सुधरे हुए होंगे तो वे सुधरेगी। तुम उन्हें सुधारने जाओगे तो वे तुम्हारी शिष्या नहीं बन जाएगी, वे परखती है।' तब कहने लगे, 'हाँ, पर सुधारे बिना चलेगा ही नहीं न!' सुधारना नहीं, माँ (मदर) को भी नहीं सुधारना। आपको तो एडजस्ट होना है। उसे नहीं सुधारना है। आप उसे सुधारने नहीं आए। सुधारने जाओगे तो वे नहीं सुधरेंगी क्योंकि सुधार किसे सकते हैं, कि वास्तव में आपकी पत्नी ही हो तो। ये तो रिलेटिव सगाई है। कैसी सगाई है? इस संबंध को तुम जानते हो? तुम सी.ए. हो इसलिए तुम्हें समझा रहा हूँ कि यह मदर के साथ जो संबंध है न, वह रिलेटिव संबंध है, रियल संबंध नहीं है। मदर के साथ ब्लड रिलेशन (खून का संबंध) है न, वह नेबर रिलेशन (पड़ोसी का संबंध) है लेकिन दोनों रिलेटिव संबंध हैं। रिलेटिव अर्थात् तुम जैसा रखोगे वैसा वे रखेंगे। पत्नी के साथ के इस रिलेटिव संबंध में भी तुम्हें संभालना नहीं आया? तब मुझसे कहने लगे, मैं तो ऐसा समझता था कि यह रियल संबंध है। मैंने कहा कि, स्त्री के साथ रियल संबंध होता होगा? इस देह के साथ ही रियल संबंध नहीं है न, तो देह की पहचान वाले के साथ कैसे रियल संबंध हो सकता है? अर्थात् ये सभी संबंध रिलेटिव संबंध है! रिलेटिव का अर्थ क्या है कि आपको यदि उसकी ज़रूरत है, तो वह तोड़ने बैठी हो तब भी आपको पूरी रात जोड़ते रहना है। आप भी तोड़ो और वह भी तोड़े तो सुबह में क्या हो जाएगा?

प्रश्नकर्ता : डिवोर्स।

दादाश्री : अत: वह तोड़ती रहे और आपको जोड़ते रहना है, पूरी रात। वर्ना सुबह में कोई भी संबंध नहीं रहेगा। रिलेटिव का अर्थ क्या है? जोड़ो। एक तोड़े तो दूसरे को जोड़ते रहना है। यानी दोनों को संभालना है। तब कहते हैं कि 'मुझे किस तरह से जोड़ना है?' मैंने कहा कि ''यदि वह पूरी रात तुम्हारे लिए बहुत विचार करती रहें कि 'बहुत खराब हैं, बहुत खराब हैं' तो तुम्हें पूरी रात ऐसा कहना कि 'वह अच्छी है, बहुत अच्छी है। यह तो मेरी भूल हो जाती है, वह तो बहुत अच्छी है।' तो सुबह में जुड़ जाएगा। कल फिर वह तोड़ना चाहे तो तुम फिर से जोड़ देना। वह कहे खराब है और आप भी कहो खराब है तो टूट जाएगा। इसलिए यदि तुम्हें उनके साथ मेल बैठाना हो तो वे तोड़ती रहें तब आपको जोड़ते रहना हैं। तो सुबह पूरा रहेगा।'' वे भले ही तोड़ें

लेकिन आधा रहता है न? फिर सुबह देख लेंगे। सुधारना किसे चाहिए, कि जिससे रियल सगाई हो उसे। उसे भले ही सुधारना कि सौ जन्म भी लग जाएँ तो ठीक है, लेकिन मुझे उसे सुधारना ही है। यह रिलेटिव सगाई है, पहले का हिसाब खत्म करने के लिए यह सगाई है, वह हिसाब चुकता हो गया तो अलग हो जाते हैं, फिर से नहीं मिलते। उन्हें सुधारने की झंझट क्यों करें! उसे सुधारने के लिए आपको तय करना है, न सुधरे तो आपको आपकी मर्यादा में रहना है, संसार बिगड़ने नहीं देना है, सुधारने के लिए हठ करें, फिर हठ करने से बिगड़ता है या नहीं बिगड़ता?

प्रश्नकर्ता : बिगड़ जाता है न!

दादाश्री : सुधारने के लिए नहीं, यह जो हो रहा है, उसे करेक्ट (सही) करके आगे चलना है। सुधारने की भावना रखनी है, सुधारने की झंझट में नहीं पड़ना है। अब उसे कैसे सुधारना है? वहाँ जाकर उसे कहना, कि मेरा दिमाग पहले बहुत खराब रहता था न, अब दिमाग ज़रा शांत हुआ है। चलो, तुम (घर) चलो! तुम्हारा दोष नहीं है, मेरे दोष अब जाकर दिखें हैं मुझे। ये समझदार लोग मुझसे मिलते हैं न, इनका काम जल्दी हो जाता है, तुरंत ही समझ जाते हैं कि यह बात करेक्ट है। तुरंत अमल में ले लेते हैं।

आपको पसंद आई क्या? बहुत?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा।

दादाश्री : उन्हें समझाकर दोनों का (संबंध) फिर जोड़ भी दिया बेचारो का! सब ठीक कर दिया! ऐसा है यह जगत्! बेकार की नासमझी हैं ये सब! ये तो रिलेटिव सगाइयाँ हैं। इन्हें सुधारना नहीं होता। उस महिला से भी मैंने कहा, 'सुधारना चाहती हो इसे? सुधारना होता होगा? जैसा माल वैसा माल, आपको चला लेना है। एडजस्ट एवरीव्हेर!' पाँचवें आरे में एडजस्ट एवरीव्हेर होना चाहिए और डिसएडजस्ट होगी तो मार खा-खाकर मर जाओगी। उसे भी समझा दिया।

बिगड़ी हुई बाजी को ज्ञान से सुधारो

सबकी अपनी-अपनी प्रकृति का भरा हुआ माल फोर्स से निकलता है। यह भरा हुआ माल कहाँ से आया?

प्रश्नकर्ता : सबकी अपनी-अपनी प्रकृति का है।

दादाश्री : और हम सोचते हैं कि 'आज फोर्स से निकलेगा' तब तक कमजोर ही पड़ गया होता है! इसलिए इसके साथ एडजस्टमेन्ट ले लो। ज्ञान न हो, तब तक नहीं चलता। उसे फिर से मुझे रोज़ समझानी पड़ती है, व्यवहारिकता। पर अब अपना ज्ञान मिलने के बाद (उसकी ज़रूरत नहीं रही न)! व्यवहारिक ज्ञान न हो, उसके साथ मुझे बहुत माथापच्ची करनी पड़ती है, आशीर्वाद देने पड़ते हैं। पर आप (ज्ञान लेने के बाद) अब कंट्रोलेबल हो गए।

अत: अब मैं अगले साल आऊँ, उससे पहले आपको कह देना है कि 'हम दोनों एक ही हैं, दादा देख लो।' अगले साल ये फ़जीहत नहीं होनी चाहिए। ये तो सभी जगह जहाँ देखो वहाँ फ़जीहत होती है! कितने दिनों तक उसे छिपाते रहेंगे, हमेशा की फ़जीहत? अब, वह नहीं होना चाहिए। दादा का विज्ञान आपके पास आ गया। शांति का उपाय दे दिया, आनंद का उपाय!

और मन शोर मचाए कि 'कितना सारा सुनाकर गए, कितना सब वह हो गया!' तब कहना, 'सो जा न, वह अभी ठीक हो जाएगा।' ठीक हो जाएगा तुरंत। उसका कंधा थपथपा देना

तो सो जाएगी। तुम्हारा सब ठीक हो गया न, नहीं? जख्म हो गए थे वे?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : पत्नी ने जख्म दिए, पति ने जख्म दिए, सभी ने जख्म दिए! वे सारे जख्म भर गए, वे ऐसे हँसते हैं कि सभी दाँत दिखाई देते हैं! कैसे जख्म देते थे, नहीं? अरे, ताने मारते हैं! ताने, ये फिर हँसी उड़ाना अलग! उन अमरिकनो को ताना मारना-हँसी उड़ाना नहीं आता। इन अक्लमंदों को ताना मारना-हँसी उड़ाना बहुत आता है। आपने ताने मारते-हँसी उड़ाते किसी को सुना है? खुद को कितना दुःख हुआ, वह सब खुद के पास *नोंध* (अत्यंत राग-द्वेष के साथ लंबे समय तक याद रखना) होता है न? वे जख्म जल्दी नहीं भरते न! जबकि ज्ञानी पुरुष के पास यहाँ दुःख होता ही नहीं है न! जो दुःख हो वह भी चला जाता है! सभी जख्म भर जाते हैं!

प्रश्नकर्ता : झगड़ा होता है तब भी भरा हुआ माल निकलता है?

दादाश्री : झगड़ा होता है, तब भीतर नया माल भरा जाता है, लेकिन यह अपना ज्ञान देने के बाद वह भरा हुआ माल निकल जाता है।

प्रश्नकर्ता : यों तो सामने वाला व्यक्ति झगड़ा करता हो और मैं प्रतिक्रमण करती रहती हूँ तो?

दादाश्री : हर्ज़ नहीं।

प्रश्नकर्ता : तो भरा हुआ माल निकल जाता है न सारा?

दादाश्री : तब तो सारा निकल जाता है। जहाँ प्रतिक्रमण होते हैं, वहाँ माल निकल जाता है। सिर्फ प्रतिक्रमण ही उसका उपाय है इस जगत् में?

प्रश्नकर्ता : बदलाव होता है इसलिए समझ में आता है, दादा सच्चे ही हैं, तभी बदलाव होता है।

दादाश्री : तुझ में बदलाव हुआ न!

प्रश्नकर्ता : हाँ, उन्हें परेशान कर देती थी। मैंने कहा, दादा नहीं मिले होते तो शायद डिवोर्स ले लेते।

दादाश्री : ऐसा? हर एक के घर में शांति हो गई! शांति नहीं थी तो हो गई!

पति डाँटें तो अब क्या करोगी तुम?

प्रश्नकर्ता : समभाव से *निकाल* कर देना है।

दादाश्री : ऐसा! अब चली तो नहीं जाओगी?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : वे चले जाएँ तो अब क्या करोगी तुम? मुझे तुम्हारे साथ रहना नहीं है, तो?

प्रश्नकर्ता : बुलाकर ले आऊँगी। माफी माँगकर, पैर छूकर बुलाकर ले आऊँगी।

दादाश्री : हाँ, बुलाकर ले आना। अटा-पटाकर, सिर पर हाथ रखकर, सिर पर हाथ फेरकर, इस तरह से करना कि फिर चूप।

शादी की अर्थात् प्रोमिस टु पे

प्रश्नकर्ता : आपको कभी भी शादी के लिए पछतावा हुआ क्या, कि 'शादी नहीं की होती तो अच्छा था?'

दादाश्री : नहीं, भाई! 'मैं तो पछतावा करना कभी सीखा ही नहीं! कार्य ही पहले से ऐसा करता था, कि पछतावा न करना पड़े। और स्त्री क्या दुःखदायी है? अरे, तुम्हारी अक्ल दुःखदायी है, उसमें स्त्री क्या करेगी फिर, तुम

टेढ़े हो उसमें? जीवन जीना आ गया होता तो पछतावा ही नहीं करना पड़ता। मुझे जिंदगी में पछतावा ही नहीं करना पड़ा। अपनी चित्रित को हुई ड्रॉईंग (चित्र) है, तभी तो मिली। तो अब क्यों हम पछतावा करें? क्या ड्रॉईंग भगवान ने बनाई थी? यह तो अपनी ही ड्रॉईंग है! राज़ी-खुशी सौदा किया है और अब क्या बदल जाओगे? सौदा नहीं किया था?

प्रश्नकर्ता : किया था न!

दादाश्री : तो अब क्या बदल जाना चाहिए? शादी की अर्थात् 'प्रॉमिस' किया है हमने, शादी में, इसलिए प्रॉमिस तो पूर्ण करना ही चाहिए न? कॉन्ट्रैक्ट किया है यह, तो हमें पूर्ण करना ही पड़ेगा न? मैं भी पूर्ण करता हूँ न! चारा ही नहीं है न!

हीरा बा की एक आँख 1943 में चली गई। उन्हें मोतियाबींद का रोग था तो डॉक्टर मोतियाबींद का ओपरेशन करने गए, तब आँख पर असर हुआ, उसे नुकसान हो गया। इसलिए लोगों के मन में हुआ कि यह 'नया दूल्हा' तैयार हुआ। फिर से शादी करवाओ। तब भादरण के एक पटेल आए। उनके साले की लड़की होगी, इसलिए आए थे। मैंने कहा, 'क्या काम है आपको?' तब वे कहने लगे, 'आपके साथ ऐसा हुआ?' अब उन दिनों '1944 में मेरी उम्र 36 साल की थी। तब मैंने कहा, 'क्यों आप ऐसा पूछने आए हो?' तब उन्होंने कहा, 'एक तो हीरा बा की आँख गई है, दूसरा बच्चे भी नहीं हैं।' मैंने कहा, 'प्रजा नहीं हैं, लेकिन मेरे पास कोई स्टेट नहीं है। बड़ौदा 'स्टेट' नहीं है कि मुझे उन्हें देना है। स्टेट होता तो लड़के को दिया हुआ भी काम का। यही कोई एकाध झोंपड़ा है और थोड़ी ज़मीन है और वह भी फिर हमें किसान ही बनाएगी न! अगर स्टेट (राज्य) होता तो समझो कि ठीक था।' फिर मैंने उनसे कहा, कि 'अब आप किसलिए यह कह रहे हो? और हीरा बा से तो हमने प्रोमिस किया है, शादी की थी तब। तो फिर एक आँख चली गई तो क्या? दूसरी चली जाएगी तब भी मैं हाथ पकड़कर चलाऊँगा।' हीरा बा दु:खी होंगी या नहीं होंगी? मेरी आँख गई तभी यह हुआ न!' हमने तो प्रॉमिस टु पे (वचन दिया है) किया है। मैंने उनसे कहा था, 'मैं कभी भी नहीं बदलूँगा, दुनिया इधर-उधर हो जाएँ, फिर भी प्रॉमिस यानी प्रॉमिस!'

वन फैमिली में साफ-सुथरा व्यवहार

फैमिली को ही साफ-सुथरा करो और कुछ नहीं। आपकी फैमिली को ही साफ-सुथरा करो। आपकी बुद्धि से समझ में आ जाए, ऐसा है या नहीं? और वन फैमिली में क्या होना चाहिए? आप दूसरों को क्या सलाह देते हैं? कोई आपस में लड़ाई-झगड़ा मत करना। आपस में किच-किच मत करना, ऐसा कहते हो न? और आप सलाह देने वाले फिर आपके घर में किच-किच! इतना ही कह रहा हूँ, ज़्यादा नहीं कहता। और मोक्ष की बात जाने दो अभी, इतना करोगे तो घर में आपस में क्लेश नहीं रहेगा। पहला धर्म जो है यह घर से शुरू करो। घर में किंचित्मात्र दखल न रहें और किसी को दु:ख न हो, उस तरह फैमिली मेम्बर जैसे हो जाओ।

फैमिली में तो आपको जीना नहीं आता। यों तो पढ़े-लिखे बहुत हो लेकिन सबसे पहले यह शिक्षा नहीं लेनी चाहिए कि वाइफ के साथ कैसे डीलिंग (व्यवहार) करना चाहिए? हाउ टु डील वीथ वाइफ? हाउ टु डील वीथ चिल्ड्रन (पत्नी, बच्चों के साथ कैसा व्यवहार करें)? वह नहीं जानना चाहिए? तुमने उसकी कोई किताब पढ़ी है, हाउ टु डील वीथ वाइफ?

प्रश्नकर्ता : 'मैरेज एन्ड फैमिली' ऐसी कोई बुक (किताब) पढ़ी थी।

दादाश्री : लेकिन फिर भी वैसे के वैसे रहे न! तो वे सब किताबें गलत साबित हुईं! जिस साबुन (के उपयोग) से मैल नहीं निकला, वह साबुन नहीं था, वह पक्का हो गया। अभी लोग धर्म सिखाने आएँ और यहाँ से अपना कुछ कम न हो तो समझ जाना कि वह साबुन नहीं है। ये तो सभी बिना काम के घूमते रहते हैं! तुरंत ही, साबुन लगाते ही मैल निकल जाना चाहिए। की हुई मेहनत फल देती है, उपयोग किया हुआ पानी व्यर्थ नहीं जाता। कुछ डॉक्टर तो वहाँ से हॉस्पिटल में से चिढ़कर आते हैं न, वे घर आकर वाइफ से कहते हैं कि, 'तुझमें अक्ल नहीं है।' अरे! ऐसा सब फैमिली में बोलना चाहिए इस तरह? बाहर वाले के साथ पसंद न हो तो कह देना चाहिए कि 'तुझमें अक्ल नहीं है', ताकि लड़ाई शुरू हो जाए। पर घर में ऐसा नहीं कहना चाहिए। घर में तो आपको जलेबी खिलाते हैं, लड्डू खिलाते हैं, पकोड़े खिलाते हैं, उन बेचारी से ऐसा नहीं कहना चाहिए। यानी वाइफ के साथ, बच्चों के साथ, सबसे पहले सुधारने जैसा क्या है कि अपने परिवार में, फैमिली में शांति और संतोष रहने चाहिए। सबसे पहले अपनी फैमिली में!

'माय फैमिली' का अर्थ क्या होता है? तब कहते हैं, 'वहाँ झंझट नहीं होती। विचारभेद होता है परंतु झंझट नहीं होती, क्लेश तो होता ही नहीं। हाँ, दखल अपनी फैमिली में नहीं होना चाहिए, बाहर जाकर दखल करो। यदि दखल करना है तो बाहर वाले के साथ जाकर करके आओ, फैमिली में नहीं होना चाहिए। यह 'वन फैमिली' कहलाती है। इसलिए कल से बंद कर देना, वे भी आपके साथ दखल बंद कर देगी। अपनी फैमिली अर्थात् अपनी! अपनी फैमिली में? आई एन्ड माय वाइफ और मेरे बच्चे, वे तो आपकी फैमिली कहलाती है। उसमें कुछ दखल नहीं होना चाहिए। बाहर वाले के साथ, अन्य किसी फैमिली के साथ दखल हो सकता है।

प्रश्नकर्ता : हर एक की पर्सनालिटी (व्यक्तित्व) अलग-अलग होने से फैमिली में कॉन्फ्लिक्ट (घर्षण) हो सकता है न?

दादाश्री : तो फिर वह फैमिली नहीं कहलाएगी। और आप कहते हैं कि 'दिस इज़ माय फैमिली!' जबकि फैमिली किसे कहते हैं कि जिसमें दखल न हो।

बहनों, कुछ बातचीत करो, दु:ख का अंत तो आना चाहिए। यों कब तक ऐसा का ऐसा रहेगा, आपका जीवन!

यह सब नासमझी ही है। नासमझियाँ दूर करो... दूसरा धर्म नहीं करोगे तो चलेगा, भगवान को उस पर कोई आपत्ति नहीं है, परंतु ऐसी नासमझी दूर कर दो न! अपनी सेफसाइड तो करो। ज़्यादा न हो सके तो आपके घर की, फैमिली की सेफसाइड तो करो। वह पहला धर्म है और उसके बाद में मोक्षधर्म है।

समझें 'माय फैमिली' की बाउन्ड्री

जीवन जीना अच्छा कब लगता है कि जब सारा दिन *उपाधि* (बाहर से आने वाले दु:ख) नहीं हो। शांति से दिन व्यतीत हों, तब जीवन जीना अच्छा लगता है। यह तो घर में क्लेश होता रहता है, तब जीवन जीना कैसे अच्छा लगेगा? यह तो पुसाएगा ही नहीं न! घर में क्लेश नहीं होना चाहिए। शायद कभी पड़ोसी के साथ हो या बाहर के लोगों के साथ हो, मगर घर में भी? घर में फैमिली की तरह लाइफ (जीवन) जीनी चाहिए। फैमिली लाइफ कैसी होती है?

घर में प्रेम, प्रेम और प्रेम ही छलकता रहें। यह तो फैमिली लाइफ ही कहाँ है? दाल में नमक ज़्यादा हो जाए तो क्लेश कर लेता है। 'दाल खारी है' फिर ऐसा कहता है! अन्डर डेवेलप्ड (अर्ध विकसित) लोग! डेवेलप्ड (विकसित) कैसे होते हैं कि दाल में नमक ज़्यादा हो जाए, तो उसे एक ओर रखकर बाकी सबकुछ खा लेते हैं। क्या ऐसा नहीं हो सकता? दाल एक ओर रखकर दूसरा सब नहीं खा सकते? 'दिस इज़ फैमिली लाइफ।' बाहर तकरार करो न! माय फैमिली का अर्थ क्या है? हमारे बीच तकरार नहीं है किसी भी तरह की। एडजस्टमेन्ट लेना चाहिए। खुद की फैमिली में एडजस्ट होना आना चाहिए। एडजस्ट एवरीव्हेर!

घर में 'माय फैमिली, माय वाइफ' कहा जाता है और वहाँ हम जाएँ तब तो भाई डाँट रहे होते हैं! अरे भाई, तुम ऐसा झूठ बोलते हो! घर में सीधे रहो न! 'माय फैमिली' किसे कहते हैं कि यह मेरी बाउन्ड्री है, इसमें तो हमारा झगड़ा ही नहीं होना चाहिए, उसे 'माय फैमिली' कहते हैं!

आपको 'फैमिली ऑर्गनाइज़ेशन' का ज्ञान है? अपने हिन्दुस्तान में 'हाउ टु ऑर्गनाइज़ फैमिली', उस ज्ञान की ही कमी है। 'फ़ॉरेन' वाले तो 'फैमिली' जैसा कुछ समझते ही नहीं। वे तो, जेम्स बीस साल का हो गया तो, उसके माता-पिता, विलियम और मैरी, जेम्स से कहेंगे कि, 'तू अलग और हम दो, तोता-मैना अलग!' उन्हें फैमिली ऑर्गनाइज़ करने की आदत ही नहीं है न! और उनकी 'फैमिली' तो स्पष्ट ही कहती है। मैरी के साथ विलियम को अच्छा न लगे तो 'डायवोर्स' की ही बात! जबकि अपने यहाँ कहाँ 'डायवोर्स' की बात? हमें तो साथ-साथ ही रहना है। तकरार करनी है और फिर वहीं, एक ही कमरे में सोना भी है। यह जीने का तरीका नहीं है। इसे 'फैमिली लाइफ' नहीं कहते! मुझे ऐसा लग रहा है, मेरी बात तुम्हें पसंद नहीं है।

प्रश्नकर्ता : नहीं, नहीं इसमें क्या हर्ज़ है? किसी को तो साफ-साफ कहना ही चाहिए न!

दादाश्री : तो इतना अच्छा है! वह समझ में आ जाए तो फिर बताना।

सच्चे वे ही जो वन फैमिली की तरह जीएँ

यह दूसरी फैमिली और यह हमारी वन (एक) फैमिली। यदि वन फैमिली है तो इसमें अन्य कोई झंझट नहीं होनी चाहिए। वन अर्थात् वन! उसमें दो नहीं होते। ये तो वाइफ ने यदि कोई भूल की हो, तो तुरंत क्लेश! वन फैमिली में ऐसा क्लेश नहीं होना चाहिए। आपको समझना चाहिए कि यह तो अपनी फैमिली है। बच्चे आपस में फैमिली कहलाते हैं। फैमिली अर्थात् मैं ही! उसमें बच्चे में शायद कमी हो, पत्नी में कमी हो, परंतु पुरुष में कमी नहीं रहनी चाहिए। आपको क्या लगता है?

आपको यदि यह बात असंभव लगती हो तो मैं आशीर्वाद दूँगा, फिर आपसे हो पाएगा। और मनुष्य सबकुछ कर सके ऐसा है। आप कॉलेज में पढ़-पढ़कर यहाँ पर अमरीका तक आए हो, तो क्या कोई ऐसा-वैसा काम किया है! इसमें प्रारब्ध ने साथ दिया है, उसी तरह इसमें भी प्रारब्ध साथ देगा। यदि आप तय करोगे तो प्रारब्ध साथ देगा। तय नहीं करोगे तो साथ कैसे देगा?

सही समझ से प्रेममय जीवन जी सकते हैं

प्रश्नकर्ता : अध्यात्म में तो आपकी बात के बारे में कुछ कहना ही नहीं है, परंतु व्यवहार में भी आपकी बात 'टॉप' की बात है।

दादाश्री : ऐसा है न, चाहे जितना बारह

लाख का आत्मज्ञान हो, लेकिन व्यवहार समझे बिना कोई मोक्ष में गया नहीं, क्योंकि व्यवहार छोड़ने वाला है न! वह न छोड़े तो आप क्या करोगे? आप 'शुद्धात्मा' हो ही, परंतु व्यवहार छोड़े तब न? यदि व्यवहार में अत्यधिक दखल करें तो कषायी हो जाते हैं। पहले यह व्यवहार सीखना है। व्यवहार की समझ के बिना तो लोग तरह-तरह की मार खाते हैं। आप व्यवहार को उलझाते रहते हो। झटपट हल लाओ न!

घर में किस प्रकार के दु:ख होते हैं। किस प्रकार के झगड़े होते हैं, किस प्रकार के मतभेद होते हैं? यदि दोनों ही लिखकर लाएँगे न, तो उनका एक घंटे में ही निबेड़ा ला दूँगा। नासमझी से ही ये होते हैं और कुछ नहीं। यह तुम्हें क्या लगता है? अपनी भूल से करते हैं न, गलत ही करते हैं न?

प्रश्नकर्ता : सही बात है।

दादाश्री : तो इतना यह बदलाव नहीं हो सकता? मेरा यह कहना है, और आप लिखकर दो। यह महिला कहती है कि इस तरह उनके साथ मेरा झगड़ा होता है, तो वे लिखकर दें तो उन्हें बताऊँगा कि इसमें यह गलत है, यह गलत है।

ये ग्लासवेर (काँच के बर्तन) टूट गए, महिला के हाथ से सौ डॉलर के और उसमें क्लेश करे उसका क्या अर्थ है? मीनिंगलेस (अर्थहीन)! वह महिला तोड़ सकती है क्या, एक गिलास? उसे ज़रा सोचना चाहिए कि महिला नहीं तोड़ सकती। तो इसके पीछे क्या-क्या कारण हैं? हमसे पूछोगे तो हम आपको बता देंगे। इसलिए इस महिला का भी गुनाह नहीं है और आपका गुनाह नहीं है। तो इसका कारण इस अनुसार है। इसलिए फिर आपके पास गुस्सा होने का कोई कारण ही नहीं रहा। इस तरह हर एक बाबत में पूछोगे तो सभी बाबतों में हम आपको बता देंगे। आपकी भूल की वजह से लूटकर गया, ऐसा हम आपको समझा देंगे। वह सब समझ लेना चाहिए।

यदि आज आपके घर के लोग यहाँ नहीं आए हों तो आप कहना कि दादा इस तरह कहते हैं कि मेरी भूल जो मुझे समझ में आ जाती है उस भूल को आप मत बताना और आपकी जो भूल आपको समझ में आ जाती है, उसे मैं भी नहीं बताऊँगी। आप इतना समाधान कर लो और यह दखल अब नहीं होनी चाहिए, कहना। प्रेममय जीवन जीओ ताकि बच्चे सभी खुश हो जाएँ, इसलिए ऐसा नहीं होना चाहिए। जीवन तो जीवन होना चाहिए।

अब, घर में झंझट तो नहीं होगी न? और वे आपकी भूल निकालें, तब कहना कि यह तो मैं जानती हूँ। यह भूल निकालने के लिए दादा ने मना किया है, कहना। ऐसे समझा देना। यानी उन्हें बताना, यह तो मैं जानती हूँ। यह भूल नहीं निकालना!

भूलें तो होती ही रहेंगी। भूल तो दोनों से होती हैं न? किसकी भूल नहीं होती?

प्रश्नकर्ता : भूल तो सभी की होती है।

दादाश्री : भूलें निकालनी ही नहीं चाहिए। घर में कभी भी किसी की भूल नहीं निकालनी चाहिए।

बाकी, पुराने कर्म को देखते रहना। देखते रहने से क्या होता है? स्टडी होती है, क्या-क्या खराब और किस तरह हुआ है, जिससे कि फिर से नए सिरे से उसमें सुधार कर सकें। मोक्ष का कोई ज्ञान तो होता ही नहीं लेकिन यदि संसार में रहना हो, तो पुराने कर्म को सुधारना चाहिए,

कि वाइफ के साथ बिना काम के गुस्सा किया, तब यही रस-रोटी थी, पर मुझे कढ़ी अच्छी नहीं लगी और यह सब बिगड़ गया। यानी इसमें से अनुभव लेकर और फिर अगले दिन तय करना चाहिए कि फिर से ऐसा नहीं करना है।

तलाक लेने वाले को दादा करते ठीक

हिन्दुस्तान में किस फैमिली में झगड़े नहीं होते, घर में? तो मुझे कई बार दोनों को समझा-समझाकर ठीक कर देना पड़ता है। तलाक लेने की तैयारियाँ ही चल रही होती हैं, कितने ही लोगों का ऐसा! लेकिन फिर क्या हो सकता है? कोई चारा ही नहीं है न! नासमझी से सब अलग हो जाते हैं! अपना पकड़ा हुआ छोड़ते नहीं और सभी बातें नासमझी की होती हैं। उसमें फिर मैं समझाता हूँ तब कहेंगे, नहीं। तब तो ऐसा नहीं है, ऐसा नहीं है।

प्रश्नकर्ता : यों भी साथ रहते हैं लेकिन अलग जैसे ही रहते हैं।

दादाश्री : ऐसा तलाक जैसा ही।

प्रश्नकर्ता : आपने सभी को इकट्ठा कर दिया।

दादाश्री : बहुत से लोग तो ऐसा कहते हैं, हम (तलाक की) तैयारी में ही थे और आपने हमें इकट्ठा कर दिया। तो अब दोनों के बिना हमें अच्छा नहीं लगता, कहते हैं। सिर्फ समझ की भूल है। समझ में ही नहीं आता, बोलते ही नहीं आता।

तलाक लेने वाले हों न, उन्हें मेरे पास लेकर आएँ तो मैं एक ही घंटे में ठीक कर देता हूँ। इसलिए फिर वे दोनों एक साथ ही रहते हैं। सिर्फ नासमझी का भय है! बहुत से बिछड़े हुए इसमें ठीक हो गए। उनका समझौता कर देता हूँ। वह रिपेर हो जाता है, ठीक हो जाता है। उनका रिपेर करने से फिर जॉइन्ट हो जाता है। हम समझ जाते हैं कि यहाँ पर इसका यह खराब है और यहाँ यह खराब है। उसकी मरम्मत कर देते हैं। ऐसे कितने ही ठीक हो गए। उन्हें 'टम्बलिंग बेरल' में डालना पड़ता है! 'टम्बलिंग बेरल' में डालकर घुमाते हैं, उससे वे उसके सभी नुकीले भाग जो होते हैं, वे (सभी नुकीले भाग) टकरा-टकराकर टूट जाते हैं।

कुछ सोचने जैसा नहीं लगता आपको? यह तो सोचो न, अच्छे व्यक्ति होकर कैसा करते हो? अभी भी सुधारा जा सकता है। अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा। बिल्कुल बिगड़ गया होता तब तो हम भी कहते कि भाई, अब सबकुछ उखाड़ दो, फिर नये सिर से बोओ। अभी डिमॉलिशन (तोड़ने) करने जैसा नहीं है, अभी तो अच्छा है। इसे रिपेर करने की ज़रूरत है। ओवरहॉल (मरम्मत) कहते है न! ओवरहॉल करने की ज़रूरत है। और कुछ नहीं। कितने अच्छे व्यक्ति हैं और आपके मतभेद क्यों होते हैं? अगले साल जब मैं आऊँगा तब तक मतभेद का भूत निकाल देना!

एक जन्म निभ सकेगा या नहीं? हल लाओ न, हर कहीं से। एक जन्म के लिए सिर पर आ पड़े हैं तो सिर पर आ पड़े हुओं के साथ हल नहीं लाना चाहिए? घर में तो सुंदर व्यवहार कर लेना चाहिए। 'वाइफ' के मन में ऐसा होना चाहिए कि ऐसा पति नहीं मिलेगा कभी और पति के मन में ऐसा होना चाहिए कि ऐसी 'वाइफ' भी कभी नहीं मिलेगी! ऐसा हिसाब ला दें तब आप सही! ऐसी समझ फिट कर लें तो सारा जीवन बहुत अच्छे से व्यतीत होगा।

जय सच्चिदानंद

मतभेद में समाधान किस प्रकार?

काल विचित्र आ रहा है। आँधियों पर आँधियाँ आनेवाली हैं! इसलिए सावधान रहना। ये जैसे पवन की आँधियाँ आती हैं न वैसे कुदरत की आँधी आ रही है। मनुष्यों के सिर पर भारी मुश्किलें हैं। शकरकंद भट्ठी में भुनता है, वैसे लोग भुन रहे हैं। किसके आधार पर जी रहे हैं, उसकी खुद को भी समझ नहीं है। अपने आपमें से श्रद्धा भी चली गई है! अब क्या हो? घर में वाइफ के साथ मतभेद हो जाए तो उसका समाधान करना नहीं आता, बच्चों के साथ मतभेद खड़ा हो जाए तो उसका समाधान करना आता नहीं और उलझन में रहता है।

प्रश्नकर्ता : पति तो ऐसा ही कहता है न कि वाइफ समाधान करे, मैं नहीं करूँगा।

दादाश्री : हं... यानी कि लिमिट पूरी हो गई। वाइफ समाधान करे और समाधान न करो तो आपकी लिमिट हो गई पूरी। खरा पुरुष हो न तो वह ऐसा बोले कि वाइफ खुश हो जाए और ऐसे करके गाड़ी आगे बढ़ाए। और आप तो पंद्रह-पंद्रह दिनों तक, महीनों तक गाड़ी खड़ी रखते हो, ऐसा नहीं चलेगा। जब तक सामनेवाले का मन का समाधान नहीं होगा तब तक आपको मुश्किल है। इसीलिए समाधान करना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : सामनेवाले का समाधान हो गया, ऐसा किस तरह कहा जाएगा? सामनेवाले का समाधान हो जाए, लेकिन उसमें उसका अहित हो तो?

दादाश्री : वह आपको देखना नहीं है। यदि सामनेवाले का अहित हो, तो वह सामनेवाले को देखना है। आपको सामनेवाले का हिताहित देखना है, लेकिन आप में, हित देखनेवाले में, आप में शक्ति क्या है?आप अपना ही हित नहीं देख सकते, फिर दूसरे का हित क्या देखते हो? सब अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार हित देखते हैं, उतना हित देखना चाहिए। लेकिन सामनेवाले के हित की खातिर टकराव खड़ा हो, ऐसा नहीं होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : सामनेवाले का समाधान करने का हम प्रयत्न करें, लेकिन उसमें परिणाम अलग ही आनेवाला है, ऐसा हमें पता हो तो उसका क्या करना चाहिए?

दादाश्री : परिणाम कुछ भी आए, आपको तो 'सामनेवाले का समाधान करना है' इतना निश्चित रखना है। समभाव से *निकाल* करने का निश्चित करो, फिर *निकाल* हो या न हो वह पहले से देखना नहीं है। और *निकाल* होगा। आज नहीं तो दूसरे दिन होगा, तीसरे दिन होगा, गाढ़ा हो तो दो वर्ष में, तीन वर्ष में या चार वर्ष में होगा। वाइफ के ऋणानुबंध बहुत गाढ़ होते हैं, बच्चों के गाढ़ होते हैं, माँ-बाप के गाढ़ होते हैं, वहाँ ज़रा ज़्यादा समय लगता है। ये सब अपने साथ में ही होते हैं, वहाँ *निकाल* धीरे-धीरे होता है। लेकिन हमने निश्चित किया है कि कभी न कभी 'हमें समभाव से *निकाल* करना ही है', इसलिए एक दिन उसका *निकाल* होकर रहेगा, उसका अंत आएगा। जहाँ गाढ़ ऋणानुबंध हों, वहाँ बहुत जागृति रखनी पड़ती है, इतना छोटा-सा साँप हो लेकिन सावधान, और सावधान ही रहना पड़ता है। और यदि बेखबर रहेंगे, अजागृत रहेंगे तो समाधान नहीं होगा। सामनेवाला व्यक्ति बोल जाए और आप भी बोलो, बोल लिया उसमें हर्ज नहीं है परंतु बोलने के पीछे ऐसा निश्चय है कि 'समभाव से *निकाल* करना है' इसलिए आपको द्वेष नहीं रहता। बोला जाना, वह *पुद्गल* का है और द्वेष रहना, उसके पीछे खुद का आधार है। इसलिए 'हमें तो समभाव से *निकाल* करना है', ऐसे निश्चित करके काम करते जाओ, हिसाब चुकता हो ही जाएँगे। और आज माँगनेवाले को नहीं दे पाए तो कल दिया जाएगा, होली पर दिया जाएगा, नहीं तो दिपावली पर दिया जाएगा। लेकिन माँगनेवाला ले ही जाएगा।

इस जगत् के लोग हिसाब चुकाने के बाद अर्थी में जाते हैं। इस जन्म के तो चुका ही देता है, किसी भी तरह से, और फिर नये बाँधता है वे अलग। अब हम नये बाँधते नहीं है और पुराने इस भव में चुकता

हो ही जानेवाले हैं। सारा हिसाब चुकता हो गया इसलिए भाई चले अर्थी लेकर! जहाँ किसी भी खाते में बाकी रहा हो, वहाँ थोड़े दिन अधिक रहना पड़ेगा। इस भव का इस देह के आधार पर सब चुकता हो ही जाता है। फिर यहाँ जितनी गाँठें डाली हों, वे साथ में ले जाता है और फिर वापस नया हिसाब शुरू होता है।

इसलिए जहाँ हो वहाँ से टकराव को टालो। यह टकराव करके इस लोक का तो बिगाड़ते हैं परंतु परलोक भी बिगाड़ते हैं! जो इस लोक का बिगाड़ता है, वह परलोक का बिगाड़े बिना रहता ही नहीं! जिसका यह लोक सुधरे, उसका परलोक सुधरता है। इस भव में आपको किसी भी प्रकार की अड़चन नहीं आई तो समझना कि परभव में भी अड़चन है ही नहीं और अगर यहाँ अड़चन खड़ी की तो वे सब वहीं पर आनेवाली हैं।

प्रश्नकर्ता : टकराव में टकराव करें तो क्या होता है?

दादाश्री : सिर फूट जाता है! एक व्यक्ति मुझे संसार पार करने का रास्ता पूछ रहा था। उसे मैंने कहा कि टकराव टालना। मुझे पूछा कि 'टकराव टालना मतलब क्या?' तब मैंने कहा कि 'आप सीधे चल रहे हों और बीच में खंभा आए तो घूमकर जाना चाहिए या खंभे के साथ टकराना चाहिए?' तब उसने कहा, 'ना! टकराएँगे तो सिर फूट जाएगा।'

यह पत्थर ऐसे बीच में पड़ा हुआ हो तो क्या करना चाहिए? घूमकर जाना चाहिए। यह भैंस का भाई रास्ते में बीच में आए तो क्या करोगे? भैंस के भाई को पहचानते हो न आप? वह आ रहा हो तो घूमकर जाना पड़ेगा, नहीं तो सिर मारकर तोड़ डालेगा। वैसे ही यदि मनुष्य आ रहे हों तो भी घूमकर जाना पड़ता है। वैसा ही टकराव का है। कोई मनुष्य डाँटने आए, शब्द बमगोले जैसे आ रहे हों तब आप समझ जाना कि 'टकराव टालना है।' आपके मन पर असर बिल्कुल नहीं हो, फिर भी अचानक कुछ असर हो गया, तब आप समझना कि सामनेवाले के मन का असर आप पर पड़ा, तब आपको खिसक जाना चाहिए। वे सब टकराव हैं। इसे जैसे-जैसे समझते जाओगे, वैसे-वैसे टकराव को टालते जाओगे, टकराव टालने से मोक्ष होता है। यह जगत् टकराव ही है, स्पंदन स्वरूप है।

एक व्यक्ति को सन् इक्यावन में यह एक शब्द दिया था। 'टकराव टाल' कहा था और ऐसे उसको समझाया था। मैं शास्त्र पढ़ रहा था, तब उसने मुझे आकर कहा कि दादा, मुझे कुछ दीजिए। वह मेरे यहाँ नौकरी करता था, तब मैंने उससे कहा, 'तुझे क्या दें? तू सारी दुनिया के साथ लड़कर आता है, मारपीट करके आता है।' रेल्वे में भी लड़ाई-झगड़ा करता है, यों तो पैसों का पानी करता है और रेल्वे में जो नियमानुसार भरना है, वह भी नहीं भरता और ऊपर से झगड़ा करता है, यह सब मैं जानता था। इसलिए मैंने उसे कहा कि तू टकराव टाल। दूसरा कुछ तुझे सीखने की ज़रूरत नहीं है। वह आज तक अभी भी पालन कर रहा है। अभी आप उसके साथ टकराव करने के नये-नये तरीके ढूँढ निकालो, तरह-तरह की गालियाँ दो, फिर भी वह ऐसे खिसक जाएगा।

इसलिए टकराव टालो, टकराव से यह जगत् उत्पन्न हुआ है। उसे भगवान ने 'बैर से उत्पन्न हुआ है', ऐसा कहा है। हरएक मनुष्य, अरे जीव मात्र बैर रखता है। ज़्यादा कुछ हुआ कि बैर रखे बगैर रहता नहीं है। वह फिर साँप हो, बिच्छू हो, बैल हो या भैंसा हो, कोई भी हो, परंतु बैर रखता है। क्योंकि सबमें आत्मा है। आत्मशक्ति सभी में एक-सी है। क्योंकि यह *पुद्गल* की कमज़ोरी के कारण सहन करना पड़ता है। परंतु सहन करने के साथ ही वह बैर रखे बगैर रहता नहीं है और अगले जन्म में वह उनका बैर वसूलता है वापस!

(परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित)

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

अडालज

22 मार्च (शनि) शाम 5 से 7 - **सत्संग** और **23 मार्च** (रवि) शाम 4 से 7-30 - **ज्ञानविधि**

7 से 11 मई (बुध से रवि) **(PMHT पेरेन्ट्स महात्मा) - सत्संग शिविर**

सूचना : यह शिविर ज्ञान लिए हुए विवाहित महात्माओं के लिए ही रखी गई है। रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। शिविर रजिस्ट्रेशन संबंधित जानकारी **Akonnect** ऐप के द्वारा दी जाएगी।

हरिद्वार में हिन्दी राष्ट्रीय शिविर - वर्ष 2025

28 मई से 1 जून - सत्संग और - ज्ञानविधि

सूचना : यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। शिविर रजिस्ट्रेशन संबंधित जानकारी **Akonnect** ऐप के द्वारा दी जाएगी।

पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत

- **'साधना'** पर हर रोज़ सुबह 7-50 से 8-15 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन उत्तरप्रदेश'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 और दोपहर 3 से 4 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन सह्याद्रि'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-45 (मराठी में)
- **'दूरदर्शन सह्याद्रि'** पर हर रोज़ दोपहर 3-30 से 4 सोम से शुक्र और शनि-रवि दोपहर 11-30 से 12
- **'आस्था कन्नड़ा'** पर हर रोज़ दोपहर 12 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 5 (कन्नड़ा में)
- **'दूरदर्शन चंदना'** पर हर रोज़ शाम 6-30 से 7 (कन्नड़ा में)
- **'धर्म संदेश'** पर हर रोज़ सुबह 2-50 से 3-50, दोपहर 2-30 से 3 तथा रात 8 से 9 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन गिरनार'** पर रोज़ सुबह 7-30 से 8-30, रात 9-30 से 10-30 (गुजराती में)
- **'वालम'** पर हर रोज़ शाम 6 से 7 (सिर्फ गुजरात राज्य में) (गुजराती में)

USA - Canada

- **'TV Asia'** पर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST

UK

- **'MA TV'** पर रोज़ शाम 5-30 से 6-30 GMT

Australia

- **'Rishtey'** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 तथा दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

Fiji - NZ - Singapore - SA - UAE

- **'Rishtey'** पर हर रोज़ सुबह 6 से 6-30 तथा 7-30 से 8 (हिन्दी में)

USA - UK - Africa - Australia

- **'आस्था ग्लोबल'** पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30 (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए)

Atmagnani Pujya Deepakbhai's Germany & UK Satsang Schedule - 2025					
Date	**Day**	**From**	**to**	**Event**	**Venue**
28-Mar-25	Fri	All Days		Akram Vignan Event (Prior Registration Required)	Willingen - Germany
01-Apr-25	Tue				
04-Apr-25	Fri	7:30 PM	10:00 PM	Pujyashree Satasang	Shree Wanza Community Centre, Pastures Lane, **Leicester**, LE1 4EY.
05-Apr-25	Sat	10:30 AM	12:30 PM	Aptaputra Satasang	
05-Apr-25		4:30 PM	7:30 PM	**GNAN VIDHI**	
06-Apr-25	Sun	10:30 AM	12:30 PM	Aptaputra Satasang	
06-Apr-25		5:00 PM	7:30 PM	Pujyashree Satasang	
11-Apr-25	Fri	7:30 PM	10:00 PM	Pujyashree Satasang	Harrow Leisure Centre, Byron Hall, Christchurch Avenue, **Harrow**, HA3 5BD.
12-Apr-25	Sat	10:30 AM	12:30 PM	Aptaputra Satasang	
12-Apr-25		7:30 PM	10:00 PM	Pujyashree Satasang	
13-Apr-25	Sun	10:30 AM	12:30 PM	Aptaputra Satasang	
13-Apr-25		4:30 PM	7:30 PM	**GNAN VIDHI**	
14-Apr-25	Mon	7:30 AM	10:00 PM	Pujyashree Satasang	
17-Apr-25	Thu	All Days		UK Shibir (Prior Registration Required)	Weston-Super-Mare
21-Apr-25	Mon				

Form No. 4 (Rule No. 8)

Information about 'Dadavani' Hindi Magazine

1. **Place of Publication :** Simandhar City, Adalaj, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
2. **Periodicity of Publication :** Monthly
3. **Name of Printer :** Amba Multiprint, **Nationality :** Indian,
   Address : Opp. H B Kapadiya New High School, At- Chhatral, Tal: Kalol, Dist. Gandhinagar–382729.
4. **Name of Publisher :** Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, **Nationality :** Indian,
   Address : Simandhar City, Adalaj, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
5. **Name of Editor :** Dimple Mehta, **Nationality :** Indian, **Address :** same as above. (As per No.4)
6. **Name of Owner :** Mahavideh Foundation (Trust), **Nationality :** Indian,
   Address : same as above. (As per No.4)

I, Dimple Mehta hereby declare that the above stated information is correct to my knowledge and belief.

Date : 15-03-2025

sd/-

Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation

(Signature of Publisher)

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, राजकोट : 9924343478, भूज : 9924345588, मुंबई : 9323528901, अंजार : 9924346622, मोरबी : 9924341188, सुरेन्द्रनगर : 9737048322, अमरेली : 9924344460, वडोदरा : 9574001557, गोधरा : 9723707738, जामनगर : 9924343687, भावनगर : 9313882288, अहमदाबाद (दादा दर्शन) : 9574001445, वडोदरा (दादा मंदिर) : 9924343335, दिल्ली : 9810098564, बैंगलूर : 9590979099, कोलकता : 9830080820
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-3232, यु.के.: +44 330-111-3232, ऑस्ट्रेलिया: +61 402179706

श्री सीमंधर स्वामी की प्रतिष्ठा

गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रभाई पुणे त्रिमंदिर की प्राणप्रतिष्ठा में

महाआरती

सत्संग- ज्ञानविधि

डूर ओपनिंग

पुणे त्रिमंदिर

मार्च 2025
वर्ष-20 अंक-5
अखंड क्रमांक - 233

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Licensed to Post Without Pre-payment
No. PMG/NG/036/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

एक-दूसरे के मतभेदो में से वापस लौटो

शादी आपके अनुकूल हुई हो, लेकिन फिर मतभेद हो, तब भीतर क्या होता है फिर? उस समय सुख बरतता है बहुत? दोनों का मतभेद होता है तब क्या होता है? डिवोर्स भी ले लेते हैं न? मतभेद तो हुए बिना रहते ही नहीं न! इसलिए निबटारा करना पड़ता है। निबटारा नहीं करोगे तो टूट जाएगा, अलग होना पड़ेगा। अभी तो आखिर में मतभेद तक पहुँच गया है। वह सब अच्छा नहीं है, बाहर शोभा नहीं देता। इसका कोई अर्थ नहीं। लेकिन अभी भी सुधारा जा सकता है। यह किसलिए ऐसा होना चाहिए? इन सब में सुपरफ्लुअस (नाटकीय) रहना है, लेकिन ये तो पत्नी के पति हो बैठे। अरे भाई, पतिपना क्यों दिखा रहे हो? यह तो यहाँ जीवित है तब तक पति और कल वह डिवोर्स न ले, तब तक पति! कल डिवोर्स ले तो तू किसका पति?

-दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner.
Printed at Amba Multiprint, Opp. H B Kapadiya New High School, Chhatral - Pratappura Road,
At - Chhatral, Tal : Kalol, Dist. Gandhinagar – 382729.